जीवन-दर्शन

अभिनव-महामानव

प्रिय बन्धुवर! आज हम एक ऐसे महामानव के पावन जीवन पर दृष्टिपात करेंगे, जो हिमालय से भी उदात्त और सागर से भी गंभीर था। जो अनेक सद्‌गुणों के बहुमूल्य मणि-माणिक्यों से भरा था। प्रत्येक सद्‌गुण अपनी पूर्णता में दृष्टिगोचर होता था, जिसका कोई ओर-छोर दिखाई नहीं देता, चूँकि ये गुण ईश्वरीय गुण थे।

हमारे ठाकुर-प्रभु सत्य एवं प्रेम के साक्षात् अवतार थे। होश संभाला तबसे आपने सत्य को अपना सम्बल बनाया; कर्त्तव्य को साधना समझ, सादगी स्वीकार कर, जीवन की डगर पर चल पड़े। रास्ते में अनेक बाधाओं, पीड़ाओं की खंदक-खाइयाँ मिलती रहीं, जिन्हें आप दिलेरी से लाँघते रहे। कदम-कदम पर चुनौतियाँ आईं जिन्हें आप राजपूती आन-बान से सहर्ष स्वीकारते गए और बिना रुके चलते गए- सत्य की तलाश में।

संकल्प के धनी तो आप थे ही, कदम पीछे रखना आपने सीखा नहीं था, छोटी उम्र से ही आप तत्परता से अध्यात्म-साधना में जुट गए। भजन, चिन्तन चलने लगा। आप जो कुछ करते पूरे मनोयोग से, भक्तिभाव से करते। उसमें पूरी तरह डूब जाते। श्रद्धा-विश्वास आपका स्वभाव ही था; ईश्वरीय सत्ता के प्रति एकाकी भाव से पूर्ण समर्पित।

गृहस्थाश्रम में जल्दी ही प्रवेश हुआ; पारिवारिक जिम्मेदारियाँ बढ़ीं। इन्हें भी परमेश्वर की व्यवस्था का अंग समझ, आप जीवट से निभाने लगे; किन्तु जीवन का प्रमुख लक्ष्य कभी आपकी आँख से

ओझल नहीं हुआ। अब पुलिस की सेवा का भीषण संग्राम शुरू हुआ; जिसे वीर सेनानी की तरह आपने जी-जान से लड़ा। अपने कर्त्तव्य को कभी पीठ नहीं दिखाई। वहाँ आपने ऐसे बुलन्द कीर्तिमान स्थापित किए जो सतयुग की कल्पना से भी परे हैं। पुलिस जैसे विभाग में आपने ऐसे अनुपम आदर्श उपस्थित किए, जिन्हें सुन मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। वर्षों काजल की कोठरी में रहकर आप पूरी तरह बेदाग ही नहीं रहें, बल्कि आपने इसे भी साधना-स्थली बना डाला। सत्य एवं प्रेम के प्रभाव से अनेक खूंखार अपराधियों का कायाकल्प किया; कठोर कैदियों के हृदयों से 'राम' बोलने लगा। पूरे इलाके में सत्य व न्याय की अलख जगा दी। अपने कर्त्तव्य का ऐसा निर्वाह किया कि सारी तप-तपस्या भी फीकी पड़ जाए।

ऐसे कर्मठ कर्मयोगी पर करुणा-सागर परमेश्वर क्यों न पसीजें! उसी की दया से एक सर्वोत्तम शुभ-घड़ी में, आपका अपने हृदयेश्वर, सद्गुरुदेव से अन्तर्मिलन हुआ। मिलते ही आप पूर्णतः उनके हाथों बिक गए, उनके होकर रह गए, अलग से अपना कुछ भी शेष नहीं रहा; बस उनका अनुग्रह, उनकी याद शेष रही। सद्गुरु भगवान आपके हृदय मंदिर में विराज गए। जीवन धन्य हुआ। अब आपका प्रत्येक स्पन्दन, प्रत्येक गतिविधि ईश्वरीय हो गई।

अब लुटाने का दौर शुरू हुआ। जैसी जिसकी झोली देखी, चुपचाप भरने लगे और भनक तक न लगने दी। सब कुछ करते हुए भी पूरा पर्दा बनाए रखा। श्रद्धालु भाई आने लगे। आप उन्हें अपने प्रेम-पाश में बाँधकर भरपूर आनन्द लुटाने लगे। महफिल का ऐसा मस्ती भरा माहौल कि कोई जवाब नहीं। न कोई तकल्लुफ, न कोई तरीकत, न कोई बाह्य औपचारिकता; बस प्रेम का सम्बन्ध। बाहर से सब कुछ सरल-सामान्य किन्तु अन्दर से सब कुछ अद्भुत, अलौकिक, आनन्द से भरपूर।

आपकी उपस्थिति, आपका मोहक दृष्टिपात ईश्वरीय होता, जिसके

पड़ते ही आगन्तुक सहज ही आत्मस्थ होने लगते। भीतर ही भीतर सफाई चलती रहती, फिर एक कुशल कलाकार की तरह आप नए-नए रंग भरते जाते। भक्तगण आनन्द के सागर में गोते लगाते। सुबह-शाम यह सिलसिला जारी रहता। सभी जी भरकर आत्मानन्द का रसपान करते। आप पिलाते न अघाते। ये मुबारक दौर वाकई लासानी थे। आइए! इस भागीरथी गंगा में थोड़ा और गहरा अवगाहन करें।

बाह्य स्वरूप

ठाकुर साहिब सम्भ्रान्त राजपूत परिवार में जन्मे थे। अतः परिवेश भी वैसा ही था। सुन्दर ओजस्वी चेहरा, जिस पर लम्बी दाढ़ी सुशोभित रहती। विशाल सुमधुर नेत्र, जिनमें करुणा का सागर लहराता। चौड़ा उठा हुआ ललाट, मस्तक पर गोल मूंगिया साफा। लम्बा इकहरा गेहुँआ बदन। आधी बाँहों की बिना कालर की सूती कमीज एवं ऊँची साठन की धोती, पैरों में सादी जूतियाँ। कंधे पर खाकी रंग का फौजी थैला टँगा रहता, जिसमें सामान रखकर चलते। एक गोल छोटा डंडा साथ रखते।

अंतिम कई वर्ष आप जयपुर के सिटी पैलेस में बिराजे। अन्दर एक छोटा-सा कमरा जिसमें कुछ सामान रखा रहता; बाहर एक लम्बा बरामदा, जिसमें रखे एक छोटे तख़्त पर आप सोते-बैठते। पास ही पानी की सुराही और गिलास रखा रहता। एक केलेन्डर, तख़्ती-पेंसिल टँगी रहती, जिस पर आप आने-जाने की सूचना लिख देते। बैठने के लिए एक दरी और मृगछाला बिछी रहती। बहुत कम सामान और फकीरी-जीवन दृष्टिगत होता।

प्रातः जल्दी उठते, कुल्ला कर ठंडा पानी पीते। शौचादि से निवृत्त हो, अच्छी तरह मुँह, हाथ, पैर धोते और कुर्सी पर बिराज जाते। कबूतरों को ज्वार डालते, आग्रह करने पर कभी थोड़ा दूध, मुनक्का लेते।

शान्त भाव से धीरे-धीरे भोजन करते, फिर थोड़ा पानी पीते और प्रभु का धन्यवाद करते हुए विश्राम करते।

बच्चों को बड़ा स्नेह करते। फल-बिस्कुट आदि लाकर रखते और ख़ूब खिलाते। आर्थिक तंगी हमेशा रहती। कोर्ट कचहरी के चक्कर लगते रहते। कई बीमारियों, घरेलू परेशानियों से घिरे रहते थे, फिर भी सदा प्रफुल्लित रहते। आपकी वाणी में गज़ब का मिठास था। कोई भी बन्धु पधारते तो आप बड़ी आत्मीयता से उनका स्वागत करते, बिठाते, कुशलक्षेम पूछते, कई संस्मरण सुनाते, जिनसे सुन्दर संकेत मिलते। बिना किसी अपेक्षा या आग्रह के, सबके साथ मित्रवत् व्यवहार करते। आपकी सहृदयता सबको सहज ही मोह लेती।

आदर्श जीवन

ठाकुर साहिब आदर्श मानव थे। आपमें सभी मानवीय गुण दिखाई पड़ते। सदाचार आपकी रग-रग में रमा था। लोक-मर्यादानुसार सब काम करते। हर बात में दूसरों का ख़याल रखते। हर एक की मदद करते, दुःख-दर्द में काम आते, पक्षियों को दाना डालते। माता-पिता की भरपूर सेवा करते। सेवाकाल में अपने वेतन का अधिकांश हिस्सा आप दीन-दुखियों की सहायता में लगाते। आपकी उदारता व सेवाभाव अभिनव था। सेवा और प्रेम की आप जीवन्त प्रतिमा थे।

आप सदा शान्त एवं प्रसन्न रहते। हर समय चेहरे पर प्रफुल्लता नाचती रहती। आशा विश्वास से भरे रहते। उदासी या चिन्ता आपसे कोसों दूर रहती। आप हर स्थिति में निर्भय रहते। श्रद्धा-विश्वास के आप धनी थे। निश्चिन्त हो आस्थापूर्वक अपना काम करते रहते। आपको कभी क्रोध करते नहीं देखा।

आप सदैव जागरूक रहते। सभी काम पूरे होश में दत्तचित्त होकर करते, जैसे आराधना हो रही हो। खाना-पीना, उठना-बैठना, सभी कुछ, पूरे ध्यान से करते। सदा पूर्णतः वर्तमान में जीते और चेतना में समाहित रहते।

ठाकुर साहिब संयम के जीते-जागते उदाहरण थे। अपने उसूलों का आप कठोरता से पालन करते; कठिन से कठिन परिस्थिति में भी

अपने नियमों से नहीं डिगते। एक सद्गृहस्थ के सभी गुण आप में विद्यमान थे। स्वभाव में अद्भुत आत्मीयता थी। निरभिमानिता आपको विरासत में मिली थी। ख़ुद अमानी रहकर सबको पूरा सम्मान देना आपका बहुमूल्य गुण था।

सहज-सरलता एवं विनम्रता

हमारे ठाकुर-प्रभु का जीवन बड़ा सरल और सहज था। बनावट का कहीं नामोनिशान नहीं। भीतर बाहर से पूर्णतः एकरूप, मन-वचन-कर्म से सदा एकरस। सीधा-सादा मनोहर स्वरूप। एक मूँगिया साफा, दो आधी बाँहों की सूती कमीज, साठन की दो छोटी धोती, दो लँगोट, दो खादी के रूमाल व तौलिया, सर्दी के लिये एक सादा बन्द गले का सस्ता गरम कोट, एक रूई की पुरानी सदरी– यह था आपका कुल वस्त्रागार। कभी किसी चीज़ का संग्रह नहीं, किसी चीज़ का अभाव नहीं।

एक पतली गद्दी, तकिया, खादी की एक रज़ाई, चादर– यह था आपका बिस्तर। एक जोड़ी जूतियाँ, जिन्हें हर मौसम में पहनते। काँच के गिलास में मिट्टी की सुराही से पानी भर कर पीते। तामचीनी के दो प्याले, चन्द इनेगिने बरतन, एक गगरा व लोटा-बाल्टी, पुरानी सिल्ला-लोढ़ी, कुछ टिन के डिब्बे– ये थे कुल पात्र। मसाला, आटा-दाल, थोड़ी मात्रा में बाजार से लाया जाता। दाल-रोटी अथवा सब्जी-रोटी बहुत थोड़ी सी ख़ुराक। कभी गाँव से पधारते तो बाजरे की ठंडी रोटी, मूली के टुकड़ों के साथ धीरे-धीरे चबा-चबा कर खा, तृप्त हो जाते। कोई विशेष पकवान या मिष्ठान्न नहीं। भोजन ध्यानस्थ हो धीरे-धीरे करते। परमेश्वर की याद में भोजन करने का महत्त्व समझाते हुए फरमाते कि इससे प्रभु-प्रेम प्रगाढ़ होता है। यदि भोजन और शयन को साध लिया जाये तो सहज ही साधना गहरी होने लगती है। आप शरीर के पोषण को, इसे अच्छी गिज़ा देने को, पूरा महत्त्व देते; लेकिन अनावश्यक लाड़-प्यार को नहीं।

आप अपने हाथ से खाना बनाते। तसल्ली से मसाला पीसते, सिगड़ी जलाते, आटा सानते और धीमे-धीमे सब्जी-रोटी बनाते। फिर बड़े प्रेम से भोग लगाकर स्वाद लेते हुए अहोभाव से भोजन करते। कभी-कभी तो खाना बनाते व खाते हुए रात बीत जाती।

हाथों में शून्यता के कारण जब आप भोजन बनाने में असमर्थ हुए तो कुछ बन्धुओं को भोजन बनाने व सेवा करने का सौभाग्य मिला। इन भक्तों के बनाये खाने की बड़ी तारीफ़ करते, 'कैसा लज़ीज़ खाना बनाया है,' 'आप अमृत घोले देते हैं इसमें'। आपके रोम-रोम से शुक्रिया अदा होता रहता, दुआ करते रहते। पानी का ठंडा गिलास भर कर दिया जाता तो कह उठते ''भगवान आपका भला करे, कैसी इनायत है गुरु भगवान की''। खाने में कोई फल या मिठाई रखने की कोशिश की जाती तो बमुश्किल थोड़ा-सा लेते। दुर्बल शरीर लेकिन हिम्मत व ताकत गज़ब की। नित्य तृप्त, संतुष्ट, छके रहते। आग्रह करने पर थोड़ा दूध, दही या मुनक्का औषधि के रूप में ग्रहण करते।

बड़प्पन आपको छू तक नहीं गया था। जब भी कोई बन्धु दर्शनार्थ पधारते तो हृदय उँडेल कर स्वागत करते। ''आइये साहब, पधारिये, बिराजिये!'' कहते हुए बड़े आदर व प्रेम से बिठाते; खुद पास ही नीचे दरी पर बिराज जाते। कोई आडम्बर नहीं, बाहरी दिखावा नहीं, गुरुडम नहीं। सहज आत्मीयता, अनन्यता, एकता, मित्रता का भाव। गजब की विनम्रता जैसे कोई सामान्य देहाती किसान हो। जाते समय अपने भक्तों को बड़े प्रेम से खड़े होकर विदा करते; जब तक आँखों से ओझल न हो जाते, हाथ जोड़े देखते रहते। जाते-आते अपने प्रेमीजनों की पद-चाप सुना करते। छोटे बच्चों तक को 'आप' कह कर सम्बोधित करते।

आपके स्वभाव में बाल-सुलभ निश्छलता के दर्शन होते। नाकुछ बने-बैठे रहते। कोई तर्क-वितर्क या वाद-विवाद नहीं। केवल आत्मभाव से निहारते रहते। खुद को सबका सेवक, सबसे छोटा समझते।

आपकी रहनी-सहनी देखकर आपकी आध्यात्मिक महानता का अनुमान लगाना कठिन होता। आगन्तुक आपकी सादगी व विनम्रता देख ठगा रह जाता।

सत्यनिष्ठा एवं कर्मठता

ठाकुर प्रभु सत्य की साकार प्रतिमा थे। आपकी सत्यनिष्ठा सतयुग की कल्पना से भी परे थी, मानो यह आपके रक्त में रमी थी। बचपन से ही सत्य आपका सर्वोपरि आराध्य रहा। अपने पिताश्री की प्रेरणा से आपने पुलिस विभाग की सेवा प्रारम्भ करने से पूर्व ही सत्यनिष्ठा और कर्त्तव्यपरायणता का कठोर व्रत लिया, जिसे आपने आजीवन दृढ़तापूर्वक निभाया।

पुलिस सेवाकाल में सारे कष्टों व बाधाओं के बावजूद ठाकुर साहिब अपनी ड्यूटी के प्रति सदा ही अडिग रहे। अपने आराम, भोजन आदि सब तरफ से बेखबर हो, वे अपने फर्ज़ के प्रति सदा सजग रहते। भोजन की थाली सामने है, हाथ में ग्रास उठाया है और किसी वारदात की सूचना आपको मिलती, तो वह ग्रास ज्यों का त्यों वापस थाली में रख, आप तुरन्त मौका-मुआइना करने निकल पड़ते। सूचना मिलते ही जो भी साधन या सिपाही मौजूद होते उन्हें लेकर दौड़ पड़ते और मौके पर पहुँच कर बड़ी दिलेरी व सूझ-बूझ से योग्य कार्यवाही करते। तेज बुखार हो, भारी वर्षा हो, कड़ाके की सर्दी-गर्मी हो, किसी भी परिस्थति में वे बड़ी मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी अन्जाम देते, प्राणपन से अपना कर्त्तव्य बखूबी निभाते और शिकन तक नहीं आने देते। सारे पुलिस विभाग में, छोटे-बड़े सभी अधिकारी आपकी सच्चाई व कर्मनिष्ठा की मिसाल देते। ट्रेनिंग के दौरान पुलिस-कर्मियों के सामने, आपकी ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा का उदाहरण पेश किया जाता। यंग साहब (आई.जी.पुलिस) जैसे अंग्रेज अधिकारी भी आपकी इज्ज़त करते। पूरी सर्विस के दौरान आप अकेले रहते और चौबीसों घंटे अपनी ड्यूटी के प्रति सजग रहते। अपने कर्त्तव्य का

कड़ाई से पालन करना उनकी सबसे बड़ी साधना थी। नियमानुसार जो ठीक होता सदा वैसी ही कार्यवाही करते, फिर चाहे परिणाम कुछ भी हो। हूबहू जैसी घटना होती उसे वैसा ही अपनी रिपोर्ट में दर्ज करते। इसमें किसी तरह का फेर-बदल नहीं करते, चाहे किसी भी अधिकारी या बड़े व्यक्ति का दबाव क्यों न हो। जयपुर रियासत के तत्कालीन चीफ़ जस्टिस शीतला प्रसाद बाजपेयी, आपकी लिखी एफ. आई. आर. देख कर बगैर गवाहों को सुने अपना फैसला सुना देते। बड़े से बड़े अधिकारी आपका नाम बड़ी इज्ज़त से लेते, खड़े होकर आपका स्वागत करते और अदब से पेश आते।

आपने अनेकों बार अपनी जान जोखिम में डालकर खूँखार डाकुओं का पीछा किया और उन्हें पकड़ा। कई अपराधी आपका नाम सुन इलाका छोड़ कर चले जाते। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जिनमें खतरनाक अपराधियों ने आपके सामने आत्म-समर्पण कर अपने अपराध स्वीकार किये। किसी अपराधी पर आपने जेल में कभी बल प्रयोग नहीं किया,न अपशब्द कहे। यह अनोखा उदाहरण है कि पुलिस विभाग में बिना मारपीट व गाली-गलौच के अपराधी सहर्ष अपना अपराध स्वीकार करें और खुशी-खुशी सजा भुगतें। यह आपका आत्मिक प्रभाव था। ठाकुर साहिब अपने हाथ से खाना बना, पहले कैदियों को खिलाते, फिर स्वयं भोजन करते। जब उनसे पूछताछ होती और आप पूछते ''बोलो रामजी!'' तो उन जाहिल-गँवार अपराधियों के मुँह से वाकई 'राम' बोलने लगते। वे हूबहू जैसे अपराध उनसे हुआ, उसे स्वीकार करते और सजा भुगतने को तैयार हो जाते। अनेक अपराधी सम्पर्क में आने के बाद चोरी-डकैती छोड़ सन्मार्ग पर चलने लगे।

आपकी सच्चाई व ईमानदारी की अनेक गाथाएँ आज भी प्रचलित हैं। आप कुएँ से पानी निकालते तो उसमें पैसा डाल कर पानी पीते। सेवाकाल में आपने कभी किसी का अन्नजल बिना पूरा पैसा दिये ग्रहण नहीं किया। पुलिस विभाग और जनसामान्य में यह बात मशहूर थी कि थानेदार रामसिंह जी रिश्वत लेना तो दूर, मुफ्त में

प्याऊ का पानी भी नहीं पीते। शेखावटी जैसी मरुभूमि में अपने लोटे-डोर से गहरे कुएँ से पानी निकाल कर पीते; किसी की लालटेन की रोशनी में रिपोर्ट बनाते तो तेल का पैसा चुकाते; किसी की सवारी का उपयोग करते तो उसका पूरा किराया देते। अपने ऊँट का मुँह बंधवा देते, ताकि वह किसी के खेत में मुँह न मार सके।

आप अपना सारा काम खुद करते। स्नानादि से निवृत्त हो पानी का घड़ा भर लाते, अपना भोजन स्वयं बनाते, सफाई करते; किसी सिपाही या दूसरों से अपना काम नहीं कराते। दौरे पर जाते तो खुद अपना बिस्तर उठाकर चलते। दत्तचित्त हो अपने कर्त्तव्य-कर्म में अहर्निश डूबे रहते। दूसरों की तन-मन-धन से सब प्रकार सेवा करते, किन्तु खुद सेवा लेने से बचे रहते।

कोर्ट-कचहरी जाने-आने का जितना खर्चा होता वही चार्ज करते। गाँव बिराजते, घर पर खाना खाते, तो उसका भत्ता नहीं लेते। अपने खर्चे से सिपाहियों और मुल्जिमों को खाना खिलाते। थैले में रखा चना-गुड़ खा लेते, लेकिन किसी का अन्न नहीं खाते। न रिश्वत लेते, न अपने मातहतों को लेने देते। बदले में प्रोत्साहन-स्वरूप उन्हें इनाम देते, खुद उनका खर्चा उठाते। आपकी सोहबत से अनेक पुलिस कर्मियों के जीवन की दिशा बदल गई। अपने पारिवारिक कर्त्तव्य भी आप पूरी तरह निभाते। परिजनों को सन्मार्ग पर चलने की निरन्तर प्रेरणा देते रहते। बच्चों को नेक शिक्षा देते रहते। उन्हें संस्कारित करते, सत्संग व भंडारों में ले जाते। अपनी धर्मपत्नीजी का घर के कार्यों में सहयोग करते। उनके प्रति स्नेह व सम्मान का व्यवहार करते। अपने पूज्य माता-पिता की भी आपने भरपूर सेवा की। उनके प्रति आपका आदर-भाव अद्वितीय था।

ठाकुर साहिब स्वावलम्बन की जीती-जागती मिसाल थे। सभी कार्य आप बड़ी तल्लीनता से, मन्थर गति से करते रहते; मानो कोई कलाकार ध्यानस्थ हो अपनी कला में संलग्न हो। छोटे से छोटा काम भी बड़े मनोयोग से साफ-सुथरा करते। लोटा माँजते तो चमका देते।

धोती-कपड़े धोते तो स्वच्छ-साफ निकाल देते। नहाते-धोते, खाते-पीते, उठते-बैठते पूरे होश में उस क्रिया में संलग्न रहते। सभी काम बड़ी तसल्ली से करते, मानो आराधना चल रही हो, कोई मधुर संगीत निकल रहा हो। आपके प्रत्येक कार्य में उसी अनन्त का स्पन्दन होता; साधना का स्वर सुनाई देता। भक्तगण आपको टकटकी लगाये देखते रहते। आपकी कार्य संलग्नता का दृश्य बड़ा मोहक होता।

ठाकुर-प्रभु सारी उम्र सत्य की तुला को दृढ़तापूर्वक थामे रहे, जिसका सन्तुलन कभी कोई डिगा न सका। पुलिस विभाग जैसी काजल की कोठरी में वे बेदाग रहे। उनका उज्ज्वल चरित्र आज भी प्रकाश स्तम्भ की तरह हमें आलोकित करता है। सच्चाई और कर्त्तव्यपरायणता के इस मूर्तिमन्त महामानव को शत् शत् नमन्!

निस्पृह, निरपेक्ष जीवन

ठाकुर-प्रभु सदा असंग, निरपेक्ष दिखाई देते। किसी से कोई अपेक्षा नहीं, कोई आग्रह नहीं। इच्छा-आकांक्षा का कहीं नाम नहीं, मानो सभी कुछ पाये बैठे हों, सदैव तृप्त, शान्त संतुष्ट। कभी कोई फरमाइश नहीं, चाह नहीं। वर्षों सान्निध्य में रहने वाले महानुभाव भी आपमें इच्छा का लेशमात्र भी नहीं देख पाये।

जमीनों के मुकदमे चलते रहे। आप वकीलों, कोर्ट-कचहरियों के चक्कर लगाते रहे; भारी आर्थिक तंगी सहते रहे, शारीरिक कष्ट उठाते रहे, लेकिन मुँह से कभी उफ तक नहीं निकला। अन्याय का प्रतिकार करना अपना फर्ज़ समझ पूरी दृढ़ता से मुकदमें लड़ते; लेकिन जीतने का कोई आग्रह-अपेक्षा नहीं। केवल गुरु-भगवान का कार्य समझ सभी परिस्थितियों में तत्परता से काम में लगे रहते।

प्रौढ़ावस्था में आप अस्वस्थ रहा करते थे। बवासीर, खाँसी, शून्यता आदि कई व्याधियों से पीड़ित रहते, लेकिन कभी आह तक सुनाई नहीं दी। सभी कुछ शान्तभाव से, परमेश्वर की इच्छा समझ,

शिरोधार्य करते; परमसत्ता पर पूरी आस्था के साथ सभी कुछ धैर्यपूर्वक सहते।

कई भक्त आपकी सेवा में उपस्थित होते; किन्तु किसी से कोई अपेक्षा नहीं– न धन की, न सम्मान की, न सेवा की। कभी कोई साहब पुष्प, फल आदि श्रद्धावश ले कर आ भी जाते तो सब कुछ प्रसाद रूप में वापस कर देते। प्रेमवश कभी कुछ ग्रहण भी किया तो बहुत थोड़ा, नाम मात्र का। लेकिन अपना सब कुछ देने को सदा उद्यत रहते।

इच्छाओं की समाप्ति ही अध्यात्म का निचोड़ है, ऐसा स्पष्ट संकेत आपके जीवन से मिलता। इच्छा-आंकाक्षा निर्मूल होते ही, सत्य का उद्घाटन होता है, ऐसा आपके निरपेक्ष व्यवहार से स्पष्ट दिखाई देता कि यही मूल साधना है। आप परमेश्वर की इच्छा को सर्वोपरि समझते और कहते कि ''हर समय यही भाव रहे कि हे प्रभु! आपकी इच्छा पूरी हो।'' अपनी कोई इच्छा जरूरी लगे तो अवश्य अर्ज कर दें, लेकिन आग्रह न रखें; क्योंकि हमारा भला किसमें है- वह बेहतर जानता है। परिणाम जो भी निकले उसे शिरोधार्य करें। साधकों को आप ऐसा भाव बनाये रखने के लिये प्रेरित करते रहते।

कृतज्ञता एवं अहोभाव

ठाकुर साहिब सदा अहोभाव से भरे रहते। हर समय परमेश्वर का धन्यवाद करते नज़र आते। सभी परिस्थितियों में अपने आराध्य की कृपा का एहसास करते। आपका रोम-रोम कृतज्ञता में डूबा रहता।

आप ऐसे निष्ठावान भक्त थे जिन्हें अपने आराध्य की हर अदा प्यारी थी। मारे या तारे वह हमारा हित बेहतर जानता है, ऐसी आपकी दृढ़ आस्था थी। ''राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा प्रभो'', यह आपका मूलमन्त्र था। 'राजी-ब-रजा' रहना आपको खूब आता था॥

आप हर समय उसकी कृपा के प्रति विभोर बने रहते, मानो कोई महोत्सव चल रहा हो। आपके हर अन्दाज से कृतज्ञता टपकती। सदा संतुष्ट और निर्द्वन्द्व बने बैठे रहते, मानो आपका नीरव मौन कह रहा हो कि जब दाता ने सब कुछ दिया है तो फिर सिवा उसके अनुग्रह की गहन अनुभूति के बचा ही क्या! गुरु भगवान के प्रति प्रतिपल कृतज्ञभाव आपकी सर्वोपरि साधना थी। कभी भावपूर्वक बोल उठते-

गुरु समर्थ सिर पर खड़े, कहा कमी तोहि दास।
ऋद्धि-सिद्धि सेवा करें, मुक्ति न छोड़े साथ।।

सिटी पैलेस में बिराजते तो आते-जाते जयपुर दरबार का इकबाल बुलन्द हो, ऐसा भाव प्रकट करते। किसी का जरा-सा भी उपकार देख आप कृतज्ञता से भर जाते। जो भी आपकी सेवा-सहायता करता, उसे आप अपने प्रभु की ही कृपा समझते। उसके उपकारों का जिक्र करते नहीं अघाते। प्रत्येक अवस्था में उसकी करुणा की, उसकी अहैतुक कृपा की अनुभूति करते। उनका रोम-रोम पुलकित होता रहता। प्रभु का गुणगान करते रहते। उसकी याद में डूबे रहते। सारा वातावरण अनुग्रह से भर जाता, नीरवता का गहन साम्राज्य घेर लेता। ऐसा लगता कि उस परमसत्ता के प्रति मौन श्रद्धांजलि अर्पित हो रही हो।

ठंडे पानी का गिलास पीते तो आनंद से तर-बतर हो जाते; भोजन करते तो प्रत्येक निवाला उसके गुणगान का मधुर संगीत बन जाता। स्नान करते तो प्रत्येक लोटे पानी को 'हर-हर गंगे' कह कर शिरोधार्य करते और उत्सव मनाते। श्वास लेते तो मानो प्रत्येक श्वांस में वही रमा हो, उसी का आडोलन चल रहा हो। प्रत्येक क्रिया, प्रत्येक स्पन्दन के साथ उसी की धुन बजती रहती। आपका रोम-रोम उसके उपकारों से पगा रहता। सोते-जागते आप उसी की स्मृति में डूबे रहते। आपकी उपस्थिति, उसकी उपस्थिति का यशोगान करती सुनाई देती। आपकी मदमस्त निगाहें अपने मालिक की

भरपूर कृपा का ज़िक्र करतीं, उसकी करुणा का संदेश देतीं। हाथ जुड़े रहते, अनुग्रह छलकता रहता, अभिवादन चलता रहता। प्रत्येक को प्रतिपल उस ओर झांकने को, खामोशी से अन्दर ही अन्दर प्रेरित करते, मौन संदेश देते रहते, देखों! उसकी अपार करुणा को! भक्तगण श्रद्धा से अभिभूत हो जाते।

ठाकुर-प्रभु का अहोभाव अद्वितीय था। उसके उपकारों का गुणगान किया करते। अपने जीवन-काल की अनेक घटनाओं का उल्लेख करते। प्रत्येक घटना की पृष्ठभूमि में उसकी करुणा का गहरा एहसास होता। किस तरह आप अनेक सवारियों से गिरे, किस तरह डकैतों, मुजरिमों से सामना हुआ, किस शान से सती बाई सा० का विवाह सम्पन्न हुआ, कैसे केस चला, किस तरह पुलिस की कठोर सेवा में वे निभ सके, कैसे कई शारीरिक व्याधियों के होते हुए अब तक जीवित रहे, हर समय हर मौके पर गुरु भगवान ने कैसे आपकी रक्षा की; इसका गुणगान करते आप गद्‌गद हो उनकी याद में खो जाते। उपस्थित भक्तगण मंत्रमुग्ध हो सुनते रहते और परमानन्द में डूब जाते।

दिव्य प्रेम-वर्षा

ठाकुर-प्रभु प्रेम के साक्षात् अवतार थे। आपके नेत्रों से करुणा की अजस्र वर्षा होती रहती। जो भी बन्धु पधारते वे आपके अगाध प्रेम में सराबोर हो जाते। आपका आत्मिक सम्पर्क अचूक था। एक बार मिलने के बाद हर कोई आपके आन्तरिक प्रेम का कायल हो, बरबस खिंचा चला आता। आपकी चितवन बड़ी मोहक थी। आपको देखते-रहने को जी चाहता। हर एक को ऐसा लगता कि वे मेरे ही सबसे अधिक अन्तरंग हैं, मुझे ही सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं। यह उनके दिव्य प्रेम का प्रभाव था।

कई चिन्ताओं, दुखों से पीड़ित महानुभाव आपके पास पधारते, अपना दुःख-दर्द सुनाते। आप बड़े प्रेम से सब कुछ सुनते रहते और सुनते-सुनाते सारी व्यथा-पीड़ा काफूर हो जाती। भक्तगण पूरी तरह

हल्के हो जाते, मानों गहरी नींद से सोकर उठे हों। लौटते समय तरो-ताजा खिले हुए लौटते। यह क्रम रोजाना सुबह-शाम चलता रहता। जैसे धूल-मिट्टी से सना, थका-माँदा बालक, बाहर से आकर अपनी माँ के अंक में चुपचाप छिप जाए, और करुणामयी माँ उसे दुलार-कर, नहला-धुलाकर फिर से स्वस्थ सुन्दर बना दे।

ठाकुर-प्रभु का प्रेम अगाध था, जिसमें अवगाहन कर सारी थकान धुल जाती, आगन्तुक अमृत से नहा जाते। आपका कृपा-कटाक्ष ईश्वरीय था, जिसके पड़ते ही अन्दर की दिव्यता प्रकट होने लगती, स्वतः जागरण होने लगता, मन मुग्ध हो खामोशी में खो जाता। आपके निकट प्रेम का अथाह सागर लहराता रहता। आप जहाँ बिराजते वहाँ गहन शान्ति का साम्राज्य होता। नीरवता निनाद करती मधुरता महकती, सौन्दर्य मुखरित होता।

इस अलौकिक वातावरण में भक्तगण डूबते उतराते रहते। समय का बोध नहीं रहता; आपा विसर्जित हो, मन अपने स्वरूप में समाहित हो जाता।

आपकी वाणी में इतना मिठास था कि सुनते रहने को जी चाहता। आप भक्तों के भावों को प्रेम से पढ़ते रहते। किसी का छोटा-सा भी सद्भाव देख बड़े प्रसन्न होते और प्रशंसा करते हुए अपने संकल्प से इसे और अधिक बढ़ाते। उनमें ईश्वरीय प्रेम को पल्लवित करते। आप प्रायः शान्त रहते; बहुत कम बोलते और जिज्ञासुओं को सरलतम साधन बताते। आपके मधुर व्यवहार का सब पर गहरा असर होता; सबको आपके व्यक्तित्व में जीवन्त प्रेम के दर्शन होते।

अपने भक्तों के लिये आप सब कुछ करने को सदा उद्यत रहते, मानो ममतामयी माँ अपने अबोध बालकों को सब कुछ दे डालना चाहती हो, स्नेह से भर देने को लालायित हो। कैसे महिमा गावें ऐसे दाता की, जिन्होंने अपना सब कुछ अपने प्रेमीजनों पर निछावर कर दिया और उन्हें इसकी भनक तक नहीं लगने दी।

आपके स्वरूप में साकार परमेश्वर बिराजता। स्वर्ग, अपवर्ग सभी आपके चरणों में निवास करते। आप प्रेम की ऐसी निर्मल गंगा थे, जिसमें सारी व्यथा, पीड़ा धुल जाती और मन आनन्द के महासागर में विहार करने लगता। आपके अलौकिक प्रेम का शब्दों में वर्णन करना असम्भव है। केवल आत्मा ही इसका आस्वादन कर सकती है।

आन्तरिक-जागरण

अपने भक्तों को अध्यात्म-मार्ग पर बढ़ाने का आपका अभिनव तरीका था। आप साधक के हृदय को पहले अपने आन्तरिक प्रेम से सराबोर कर देते, फिर अन्दर ही अन्दर उसका कायाकल्प शुरु हो जाता। आगन्तुक को आप अपने प्रेमपाश में बाँध लेते, फिर आपके संकल्प से उसमें आन्तरिक क्रान्ति शुरु हो जाती। आप सबको आत्मस्वरूप निहारते और इसी दृष्टिपात से जागरण शुरु हो जाता। प्रत्येक में प्रेम का बीज बोकर आप उसे स्नेह से सींचते रहते। आपके पास आया हुआ व्यक्ति वापस लौट कर नहीं जा पाता। जो भी आता, आपका होकर रह जाता और धीरे-धीरे सहज ही अन्तर्मुखी हो वह अन्तर्यात्रा पर निकल पड़ता।

आप हर एक साधक को उसकी स्थिति के अनुसार आगे बढ़ाते। जो जिस इष्ट, आराध्य या गुरु की उपासना में लगा होता, उसे आप उसी माध्यम से आगे बढ़ाते; उसी इष्ट-आराध्य के जरिये उसकी मदद करते। जिसे जिस स्थिति में पाते वहीं से ऊपर उठाते। आपके पास अनेक मतावलम्बी बन्धु पधारते। आप इसका विशेष ख़याल रखते कि किसी की श्रद्धा विचलित न हो, बल्कि अधिक सुदृढ़ हो। अन्य सद्गुरुओं के शिष्य भी आपके पास पधारते; उनकी आप भरपूर मदद करते, किन्तु उन्हें अपने ही सद्गुरुदेव में पूर्ण आस्था रखने की हिदायत देते। जहाँ जिसकी आस्था होती उसी को सुदृढ़ बनाते। आपसे मिलने के बाद प्रत्येक की साधना जीवन्त हो उठती, भाव प्रगाढ़ होने

लगता, आपा गलने लगता और अपने आराध्य की निकटता महसूस होने लगती।

आप किसी विशेष साधना-पद्धति पर जोर नहीं देते। आपका संकेत होता कि सभी विधियों में, सभी नामों में, सभी रूपों में उसी का निवास है। किसी भी तरह उसे पाया जा सकता है। केवल श्रद्धा-विश्वास चाहिये। वह भीतर ही बिराजा है और सतत् हमारी बाट जोहता है। भाव से पुकारने की, होश में आने भर की देर है। हमारा आपा ही मिलन में बाधा है। सद्गुरु के माध्यम से यह आसानी से गल जाता है। अतः किसी के हो जाने की जरूरत है।

अध्यात्म-विद्या पर आपका पूर्ण अधिकार था। सद्गुरुदेव का सारा सामर्थ्य आप में विद्यमान था, किन्तु आप सदा पोशीदा रहते। अपने प्रेमी भक्तों की सब प्रकार मदद करते, उनकी दुनियावी जरूरतें भी पूरी करते और उनमें धीरे-धीरे श्रद्धाभाव जगा कर उन्हें इस मार्ग पर बढ़ने को प्रेरित करते। साधकों को सुबह शाम 15-20 मिनिट ध्यान में बैठने का संकेत करते। यदा-कदा श्रद्धालु भक्तों को अपने सामने ध्यान में भी बिठाते। आपकी आन्तरिक तवज्जोह से मन सहज ही शान्त हो जाता और निजानन्द में डूब जाता। अनवरत फैज़ की वर्षा होती रहती; दुनिया बिसर जाती। कुछ साधकों के सिर जमीन से लग जाते। अन्तर्यात्रा चलती रहती, भक्तगण दिनों दिन सकून का एहसास करते और द्वन्द्वों से उबरते जाते। दरबार में रोजाना यही आलम रहता। आगन्तुक भाई देश-काल की संज्ञा भूल, ध्यान में खो जाते। सहज-बातचीत का सिलसिला भी चलता रहता, कभी हंसी के ठहाके लगते। मस्ती भरा वातावरण देहाध्यास को निगल जाता। अन्दर ही अन्दर कायाकल्प होता रहता और साधना गहराती जाती। आगन्तुकों को आन्तरिक परिवर्तन का एहसास होता, हृदय कृतज्ञता से भरता जाता और अन्तरंगता सघन होने लगती।

आपका निःस्पृह प्रेम भक्तों को सहज ही परमेश्वर की ओर अग्रसर करता जाता। हृदय अनायास ही उस ओर झुकने लगता।

आपकी कृपा-वर्षा विलक्षण थी। भरपूर बरसते रहते, सबको आकंठ भिगो देते। किसको क्या दे दिया जाये, लुटा दिया जाये, यही एक धुन रहती। आपका काम ही मानो किसी न किसी बहाने भर देने का, निहाल कर देने का था। आगन्तुक भाईयों को हृदय से लगा लेते और ¥ Ùæ©æ ãÜ©Ù· ÿè¥ ‹Ì Øãæææèé¤ãÜÁ èÐ¥ ÂÙðŸæ× é â ÐÈ¤ÚÙ èð **“पर्दे ही पर्दे में ले जाते हैं हरम तक”** (यानी सदगुरु हमें अन्दर ही अन्दर चुपचाप अपने स्वरूप तक पहुँचा देते हैं)। इन मधुर अनुभूतियों को शब्द-बद्ध करना असम्भव है; गूंगे का गुड़ है, जिसका स्वाद भर लिया जा सकता है, कहा नहीं जा सकता। ठाकुर-प्रभु अपने भक्तों को सहज ही किनारे लगाते रहते और उन्हें पता भी न लगता कि उन्हें सुदामा की भाँति निहाल कर दिया गया। ऐसे उदार दाता थे हमारे ठाकुर-प्रभु!

अनुपम-समर्पण

ठाकुर-प्रभु समर्पण के मूर्तिमान स्वरूप थे। अपने आदर्शों के प्रति समर्पण आपके रोम-रोम में रमा था। यह आपकी बहुमूल्य निधि थी। गुरु-भगवान के दर्शनों के बाद आप पूरी तरह उनके हाथों बिक गये; फिर अपना शेष नहीं रहा। कुछ आगा-पीछा नहीं, विकल्प नहीं; केवल अपने आराध्य रहे, उनकी अनवरत उपस्थिति और एकता की अन्तरंग अनुभूति रही।

अपने गुरुदेव के प्रति आपका प्रेम अनन्य था। आप फरमाते– गुरु-भगवान के दर्शनों के बाद मुझे लगने लगा कि अरे तू तो वैसे ही चलता है जैसे गुरु-भगवान चलते हैं, वैसे ही देखता है जैसे गुरु-भगवान देखते हैं, वैसे ही बोलता है जैसे गुरु-भगवान बोलते हैं। आप उनकी महिमा का गुणगान करते नहीं अघाते। उनकी कृपा-वर्षा का भाव-विभोर हो वर्णन करते और कह उठते ‘‘न जाने कौन गुण पर दयानिधि रीझ जाते हैं;’’ कहते-कहते नेत्रों से अश्रु ढुलक पड़ते। सदा अबोध शिशुवत उनकी याद में खोये रहते। सोना उठना, सब कुछ

उनकी याद में चलता रहता। सारे क्रिया-कलाप उन्हीं के लिये, उनकी प्रसन्नता के लिये होते।

आपकी उपस्थिति में सदैव 'तू ही तू' की ध्वनि सुनाई देती; महसूस होता कि अपना आपा (अहं) ही अवरोध है, अलग से अपना होना ही भ्रान्ति है। सच में अपना होना है ही कहाँ। अपने आराध्य में डूबने से यह बोध गहराने लगता है। अहं के विसर्जन की कैसी सरल साधना है। ठाकुर-प्रभु इसके जीवन्त प्रमाण थे। आप सब तरह लुटे-मिटे, ना कुछ बने रहते। फरमाते "रामसिंह तो न जाने कबका मर चुका, अब वह है ही कहाँ!" कितने यत्न से आपने अपने आपे को ऐसा निःशेष किया कि ढूँढ़ने से भी कहीं उसका पता न चले।

अपने गुरु-भगवान के दरबार में फतेहगढ़ भंड़ारे पर पधारते तो आनन्द-विभोर हो उठते। फूलों के गुलदस्ते, इत्र, फूलमालाएँ खरीदते। पहनने के नये वस्त्र, तौलिया आदि ले जाते। रास्ते भर अपने गुरुदेव की याद में डूबे रहते, खाना-पीना भूल जाते। सुध-बुध खोये जब फतेहगढ़ रेलवे स्टेशन पर उतरते तो भाव विभोर हो मन की मन इस पावन नगरी को नमन करते। आह्लादित हो इसे निहारते, मानो बैकुण्ठ में आ गये हों। बड़े प्रेम से सबको मिलते, अभिवादन करते। स्नान करके समाधि मन्दिर को भली प्रकार धोते; मानो अपने गुरु-भगवान का अभिषेक हो रहा हो। फिर अपने पहनने के नये वस्त्रों से इसे पोंछते, इत्र फुलैल छिड़कते और गजरे-गुलदस्ते सजाते। साल भर आप इन्हीं कपड़ों को पहनते। भंडारे के महोत्सव में सबसे बड़े अदब एवं आदर से पेश आते। गुरुपरिजनों को नज़राना पेश करते और सबके प्रति पूज्यभाव रखते। भोजन-प्रसाद ग्रहण करते समय अहोभाव में डूब जाते। फतेहगढ़ का ज़र्रा-ज़र्रा आपके लिये पवित्र था। सबकी ओर से धन-राशि भेंट करते। गंगा स्नान करते और अपने सद्गुरुदेव को कोटिशः नमन् करते हुए बड़ी मस्ती में घर लौटते।

आप 'गुरु-भगवान', 'गुरु-भगवान' कहते नहीं अघाते। सदा अनुग्रह में डूबे रहते, हाथ जुड़े रहते, मौन संदेश देते रहते, ''देखो! उस प्रभु की अपार अगाध करुणा को।'' आपका समर्पण-भाव देख भक्तगण श्रद्धा से अभिभूत हो जाते।

अपने श्रीमुख से कहते कि या तो बिल्ली के बच्चे हो जाओ या बन्दर के। या तो किसी में अपना आपा विसर्जित कर दो या उसे अपना बना लो। अपना बनाना कठिन है, लेकिन किसी के हो रहना आसान है-

दो ही शर्ते हैं वफा की, आजमा कर देख लो।
खुद किसी के हो रहो, या अपना करके देख लो।।

ठाकुर साहिब आगन्तुक महानुभावों को अपना आपा उस प्रभु को समर्पित करने को प्रेरित करते और गुनगुनाते रहते-

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहे।
कि दाना खाक में मिलकर, गुलोगुलज़ार होता है।।

जब 'मैं' था तब 'तू' नहीं, अब 'तू' है 'मैं' नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, या में दो न समाहिं।।

तू तू करता तू भया, अब कछु रही न हूँ।
बलिहारी तेरे नाम की, जित देखूँ उत तू।।

पाठक बन्धु! ठाकुर-प्रभु अपने आराध्य में समाहित हो आज भी हमें अनुप्राणित करते हैं। वे नित्य हैं, अंग-संग हैं, केवल श्रद्धापूर्वक अपने हृदय का तार उनसे जोड़ना है। उनके आदर्शों पर बढ़ने का प्रयास ही इस महामानव के प्रति हमारी विनम्र श्रद्धाञ्जलि होगी। इसी संकल्प के साथ इस पावन वेला में ठाकुर-प्रभु के चरणों में शतशः नमन।

श्रद्धाञ्जली

(ठाकुर साहिब के प्रति कुछ भक्तों के भावोद्‌गार)

कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जिनसे हम कितना भी लें, कोई ओर-छोर दिखाई नहीं देता। परम पूज्य ठाकुर साहिब भी ऐसी ही अलौकिक विभूति थे। उनके स्मरण मात्र से सभी कुछ उपलब्ध हो जाता है।

आपके सामने कठोर कैदी भी सहज ही अपना अपराध स्वीकार कर लेते, जो वे बड़े अधिकारियों के सामने नहीं करते। यह आपके समर्पित जीवन का प्रभाव था। जब अपराधी-कैदी आपके सामने लाये जाते और आप उनसे पूछते **'बोलो रामजी!'**, तो वे बरबस सत्य घटना बताने लगते।

आपका हृदय अथाह करुणा से भरा रहता। ठाकुर साहिब सदा ब्राह्मी स्थिति में बिराजे रहते।

(पू. स्वामी योगानन्दजी तीर्थ, कामशेत)

महात्मा ठाकुर साहिब श्री रामसिंहजी लालाजी महाराज के अति प्रिय शिष्यों में से थे। गुरुदेव के प्रथम दर्शन से ही आप 'फ्नाफिल मुरीद' हो गये। आपके निश्छल प्रेम, सरल स्वभाव और पूर्ण-समर्पण से हमारे गुरुदेव आपसे अत्यन्त प्रसन्न थे। अपने गुरुदेव को आप सदा, गुरु-भगवान, कहा करते और उन्हें साक्षात् भगवान ही मानते थे।

पुलिस जैसे विभाग में पूर्ण निष्ठा व सच्चाई से अपना कार्य करते हुए आपने अध्यात्म-विद्या के जो उच्चतम सोपान चढ़े थे, वे बेमिसाल हैं।

लालाजी साहिब (ठाकुर साहिब के गुरु-भगवान) उनके मुँह से बोलते

थे। उनकी मान्यताएँ लालाजी साहिब की मान्यताओं से मिलती थीं।

लालाजी साहिब के शिष्यों में ठाकुर रामसिंहजी और चच्चा जी महाराज (लालाजी साहिब के छोटेभ्राता) के शिष्यों में श्री शिवनारायणदास 'गाँधी' जी आदर्श हैं, इनके जैसी मिसाल मिलना मुश्किल है।

(पूज्य डॉक्टर श्री हरनारायणजी सक्सेना साहिब)

रामसिंहजी तो साक्षात प्रेम की मूर्ति थे। उनके दर्शन मात्र से ही शान्ति मिलती थी।

(पूज्य श्री शिवनारायणदास 'गांधी')

हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है कि हमें ऐसे दुर्लभ महापुरुष का सान्निध्य मिला। उन्होंने हमें क्या नहीं दिया। सब तरह निहाल कर दिया। अपना भरपूर प्रेम हमारे हृदयों में उँडेल कर हमें सराबोर कर दिया। अपने आपको ही दे डाला। कुछ भी बाकी नहीं रखा।

ठाकुर-प्रभु के पास हर समय प्रेम की रस-धार बहती। उठने को जी नहीं करता। कैसी अद्‌भुत चितवन थी; जिस पर एक बार पड़ जाती, वह निहाल हो जाता। करुणा से सराबोर कर देते। उनकी कृपा-दृष्टि अत्यन्त मादक थी। उनका सारा तरीका ही रहस्यपूर्ण था। किसी न किसी बहाने वे सब पर कृपा-दृष्टि करते रहते। सब कुछ करते लेकिन किसी को भनक तक नहीं पड़ने देते।

(आदरणीय श्री नाहरसिंहजी साहब, रि. तहसीलदार, पाटौदा)

ठाकुर साहिब अपनी इच्छा-शक्ति से भक्तों का जागरण करते, उनकी इच्छापूर्ति में सहायक होते हुए उनमें ईश्वर-प्राप्ति की इच्छा जगाते। आज भी वे सर्वव्यापी हो कार्य कर रहे हैं। हम सबको प्रेरित व प्रकाशित करते हैं। वे ही सब कार्य कर रहे हैं।

(आदरणीय श्री नरेन्द्र कुमार जी लोहिया सा., कोटा)

ठाकुर साहिब सेवा सबकी करते, लेकिन मानते एक अपने

गुरु-भगवान को ही थे। मुकदमें भी लड़ते तो सेवा और फर्ज़ समझ कर। आप अपने प्रेमी-भक्तों के कष्ट-व्याधियाँ तक अपने शरीर पर लेकर भुगता दिया करते। आप जैसे सन्त दुर्लभ हैं।

(संत श्री दुर्गानाथ महाराज)

ठाकुर साहिब जैसा अलौकिक महापुरुष तो न आज तक कोई हुआ है और न आगे होगा।

(ब्रह्मलीन सन्त श्री दुर्गासिंहजी भाटी सा., जयपुर)

ठाकुर साहिब ने हमें सब कुछ बख़्श दिया है। उन्होंने हमें गुप्त रूप से इतना दिया है कि लौकिक और पारलौकिक दोनों का भरपूर आनन्द लेते रहें। वे हमारे लिये रुक्के मार-मार कर दुआएँ किया करते रहते। जैसा उन्होंने हमें निभाया है, वैसा कोई नहीं निभा सकेगा। वे 'आत्मा-पिछाण' महापुरुष थे। उनकी याद में ही सब कुछ है। याद करते रहें और आनन्द लेते रहें।

(स्व. हकीम सा. लाला मातूरामजी जैन, जयपुर)

ठाकुर साहिब तो साक्षात भगवान थे। मेरा सौभाग्य है कि जन्म हुआ और उनके दर्शन मिले। उनकी याद में ही सब कुछ है।

(ब्रह्मलीन संत श्री श्यामसिंहजी (बाबोसा), हुसैनपुरा)

सर्वत्र फैली हुई प्रकाश-पुंज-धारा हमें अपने गुरुदेव का स्मरण कराती है। उनका स्मरण, उनका गुणगान उनकी कथाएँ हमें उनके विद्यमान होने का आभास कराती हैं। उनके चिन्तन से हम उनसे पूरा लाभ उठाने में सक्षम हैं। हम में लगन, अनुराग, निष्ठा व विश्वास हो तो हमारा सीधा-सादा अभ्यास हमें शीघ्र अपने मार्ग पर आगे बढ़ा सकता है। अपने को पूरी तरह उनके अर्पण कर देने में ही इच्छित वस्तु की प्राप्ति और मन की शान्ति निहित है।

(स्व. भाई श्री रवीन्द्रसिंहजी चौहान, जयपुर)

ऐसा अमृत पान कराया

इन नयनों ने देखी केवल, अस्थि चर्म से निर्मित काया।
अन्तर के उस प्रभा पुंज को, इन नयनों से देख न पाया।
पलकों पर रहती है हर क्षण, स्वर्णिम आभा की परछाया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया ॥ 1 ॥

श्रवणों से होकर अन्तर में, जब अनगिनत बार तुम्हारी।
सुधामयी वाणी प्रतिपल क्षण, भरती रहती याद तुम्हारी।
यौवन के इस नव प्रभात में, बना बना कर गीत मिटाया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया ॥ 2 ॥

जन्म-जन्म से सूख रहे थे, इस काया के होंठ बिचारे।
मेरे मन से छूट चुके थे, सुरसरिता के सभी किनारे।
किन्तु न जाने किसने आकर, ऐसा अमृत पान कराया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया ॥ 3 ॥

राजमहल के सन्त सयाने, असली रूप छिपाया तुमने।
सुन्दर बोल सुनाने वाले, बातों में बहलाया तुमने।
यह है ऐसा राज समझ कर भी, मैं इसको समझ न पाया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया ॥ 4 ॥

गुरु का ज्ञान समझने वाले, अपना भेद समझना होगा।
प्रीति बढ़ाने वाले पहले, अपना रूप बदलना होगा।
सांझ सवेरे आकर किसने, मुझ पर अपना शीश झुकाया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया ॥ 5 ॥

डगर डगर पर झांक रहे हैं, मिलने वाले मीत हमारे।
मुझे जगाने आया कोई, ले नूतन अनुराग तुम्हारे।
मिला पिलाने वाला मस्ती, क्यों मैं पीने में शर्माया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया ॥ 6 ॥

कौन कहेगा आकर मुझको, अपने आप सम्हलना होगा।
ज्योति पुंज के उस प्रकाश को, हृदयन्तर में भरना होगा।
छिप बैठे पलकों के पीछे, तुमको कोई देख न पाया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया॥7॥

भोर हुआ मानव जीवन के, इस उपवन में मौसम आया।
यह वसन्त पाने वालों ने, अपना जीवन सफल बनाया।
राग-द्वेष की मिटी कल्पना, सूखा जीवन फिर सरसाया।
गुरुवर पाया प्रेम तुम्हारा, फिर भी मैं पहचान न पाया॥8॥

(स्व. भाई श्री रवीन्द्रसिंहजी चौहान, जयपुर)

सतगुरु सरल सहज सुखराशी।

अति उदार करुणा वरुणालय, दीनबन्धु दुःखनाशी।
जग चिन्ता तज कर गुरु चिन्तन, हिय अति होय हुलासी॥

जग जंजाल मरण जीवन का, चक्कर लख चौरासी।
आवागमन मिटा दे सतगुरु, काट देय यम फांसी॥

पथ विहीन भटके जीवन में, जीव जगत अभिलाषी।
प्रेम दीप से करे प्रकाशित, पथ गुरु परम प्रकाशी॥

गुरु सम नहिं कोई परम हितैषी, भव भय रोग-विनाशी।
काम क्रोध मद मोह लोभ तजि, भज मन गुरु अविनाशी॥

(स्व. भाई श्री सीतारामजी शर्मा, जयपुर)

प्रणामाञ्जलि

ऐसा एक संत रहता था जयपुर में पहले।

बांका थानेदार रहा जो
संत का पहरेदार रहा जो
काजल की कोठरी बीच जो बिना दाग रहले।

प्राण हथेली पर रख अपने
दस्यु दबोचे कर्मनिष्ठ ने
सच पर दृढ़ रह कर पद छोड़ा चिदानंद पद ले।

क्षत्रिय था पर रहा निरामिष
मदिरा को समझा जिसने विष
जो आरूढ़ धर्म पर था निज संयम का व्रत ले।

चोरों में भी कर हरि-दर्शन
स्वयं पकाय परोसे भोजन
निज करुणा से कुटिल जनों का जो स्वभाव बदले।

राज द्वार भी साधु समागम
करता मूर्तिमान निगमागम
सहज समाधिमगन वह सूफ़ी प्रभुपद कमल तले।

परम भक्त को करो नमन् मन
क्षणभंगुर जीवन हो पावन
कृपा कटाक्ष संत के, कलि के नहले पर दहले।

(आदरणीय श्री रामनाथजी कमलाकर, जयपुर)

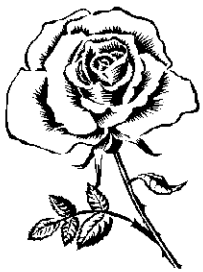

पावन प्रसंग

(ठाकुर-प्रभु द्वारा अपने प्रेमी भक्तों को कहे आप्त वचन एवं प्रेरक-प्रसंग)

- एक दिन एक प्रेमी भक्त जब ठाकुर साहिब से अपनी दुनियावी परेशानियों का जिक्र कर रहे थे तो आपने बड़े प्रेम से कहा- ''आप कर्त्ता बने हुए हैं, इसीलिये परेशान हैं। बनोगे तो पिटोगे!''

- जब आपसे कहा कि सांसारिक लोग तो मौज-मजे करते, हँसते-खेलते दिखाई पड़ते हैं, जबकि ईश्वर के मार्ग पर चलने वाले लोग उदास से दिखाई पड़ते हैं, तो मुस्करा कर कहने लगे- ''फिर अज्ञान का उत्साह जाता रहता है; इसीलिये ऐसा लगता है।''

- भक्तगण जब आपसे अपनी आन्तरिक स्थिति और आध्यात्मिक प्रगति का जिक्र कर असंतोष ज़ाहिर करते, तो आप कई प्रकार से उनका प्रबोधन करते।

''सब अपने आप हो रहा है, गुरु-भगवान सब अपने आप कर रहे हैं।''

''कमी महसूस होना अच्छा है, इससे शरणागति बनी रहती है।''

- एक बन्धु जब अपनी कमियों और कमजोरियों का ज़िक्र कर रहे थे, तो आप शान्त भाव से सुन कर बोले- ''अन्त समय तक अपनी कमियाँ दिखनी चाहिये, इसी में सुरक्षा है।''

- एक दिन एक प्रेमी भक्त ने जब आपसे अपनी मानसिक उलझनों और समस्याओं का उल्लेख किया तो आप कहने लगे–''हर समय यही ख़याल रहे कि हे प्रभो! आपकी इच्छा पूर्ण हो। हमारा भला वह बेहतर जानता है। इसलिए राजी व रज़ा रहे।''

''अपनी बात रख दें। अपना ख़याल अर्ज़ कर दें। लेकिन जिद्द न रखें। भाव रहे कि जैसा आप मुनासिब समझें करें।''

- कई अवसरों पर आप शरणागति का महत्त्व समझाते। सर्वस्व समर्पण का उद्‌बोधन करते। गीता के श्लोकों का उर्दू तर्जुमा सुनाते :–

जो करे सो मेरे खातिर, जो धरे मेरे लिए।
सादगी में मेरा आशिक, क्या गज़ब होशियार है॥

हो मोहब्बत उनसे उसको, जिनको मैं पैदा करूँ।
बेतमा हो बेगरज़ हो, तब वो मेरा यार है॥

मुझसे चाहे मुझको, मेरी परस्तिश में रहे।
दूसरे की शक्ल को, देखे तभी बेज़ार है॥

जो कुछ बताना था बताया, और क्या बाकी रहा।
एक नुक्ता है फ़कत, जो तेरे हक दरकार है॥

तर्क कर सब मिल्लतें, ले मुझ अकेले की पनाह।
फिर मेरा जिम्मा है अुर्जन, तेरा बेड़ा पार है।।

- एक दिन संध्या समय कोई भाई आपके दर्शनार्थ सिटी पैलेस पधारे। आपने बड़े स्नेह से उन्हें अपने सामने दरी पर बिठाया। कुछ देर बाद उन्हें उदास देख उनकी ओर मुखातिब होकर पूछा– ''क्यों साहब! आपके पिताजी आपको सुखी देखने में कोई कमी रखते है क्या?''

उन्होंने कहा कि नहीं साहिब, पिताजी तो मेरी सुख-सुविधा के लिए सब कुछ करते हैं। कोई कमी कैसे रखेंगे? तो आपने प्रेम से फरमाया - ''साहब! जब दुनियावी पिता आपको राजी रखनें में कोई कसर नहीं रखते, तो जो परमपिता है वो आपको सुखी देखने के लिये कोई कसर रखेगा क्या? विश्वास सबसे बड़ी चीज़ है।'' आगन्तुक भाव-विभोर हो उठे।

आपने फिर कहा–

वन, रण, व्याधि विपत्ति में वृथा सोच क्यों होय।
जो रक्षक जननी जठर, सो प्रभु गयो न सोय॥

- एक बार परमेश्वर की याद और स्मरण के सन्दर्भ में आपने फरमाया ''ईश्वर की याद करने से ईश्वर मोटा नहीं हो जाता। उसकी याद से हमारे अन्दर ईश्वरीय गुण आने लगते हैं। जैसे की याद करेंगे वैसे ही गुण हम में आते हैं। किसी दुष्ट की याद करने पर मन में मारपीट या दुष्टता के ख़याल आने लगते हैं; लेकिन जब किसी सज्जन का ख़याल आता है तो मन में उसकी सज्जनता के गुण पैदा हो जाते हैं। एक याद में सब कुछ आ जाता है। हर समय उसकी याद बनी रहे।''

- एक प्रेमी भक्त से आप कहने लगे–

''बुरी सोहबत से ख़ूब बचना चाहिये। जिस बात से कोई मतलब न हो, ऐसी बात न कहनी चाहिए, न सुननी चाहिये। ऐसे ही जिस चीज़ से कोई मतलब न हो, उसे गौर से नहीं देखना चाहिये वरना उसके फ़िज़ूल संस्कार बन जाते हैं।''

- अन्य मौकों पर कहा–

''नशे की चीज़ से बचना चाहिए, वरना यह शौक बड़ी मुश्किल से छूटता है। कोशिश करके इसे छोड़ देना चाहिए।''

''सभी काम धर्मपूर्वक (आन्तरिक आदेश से) निभाते चलो तो वे भजन ही हैं। यदि स्त्री-बच्चे सभी भजन करें तो यह चौगुना हो जाता है। वे रुकावट भी नहीं डालते। जिस घर में भजन होता है, उसके दोष निकल जाते हैं। अशुभ भी शुभ हो जाता है।''

''महात्मा लोग वन में जाकर कठिन तप-साधना करते हैं, बड़ी-बड़ी तकलीफें उठाते हैं; उन्हें जो मिलता है वह तो मान-अपमान और दुनियावी उतार-चढ़ावों को सहन करने वाले अपने भक्तों को भगवान वैसे ही दे देते हैं। ''

- दुनियावी व्यवहार की दिक्कतों का जिक्र सुन कर आप एक बार कहने लगे–

''यह दुनिया उसने किसी मसलहत से बनाई है। यह बहुत बड़ी पाठशाला है इसी में रह कर उसे पाना है। इसी में उसका दर्शन करना है।''

- एक दफे बरसते मेह की बूँदों को देखते हुए आनन्द से भरे हुए कहने लगे–

''देखिये! इनमें अनगिनत शब्द हो रहे हैं। कैसी लीला है उसकी, कुदरत को देखकर उसकी याद करना भी ध्यान भजन ही है। सब उसी का पसारा है।''

- एक बार दुनियावी व्यवहार की चर्चा होने पर आपने फरमाया– ''दुनिया के सब काम धर्मानुसार करें, सब चीजों का सदुपयोग करें, सबसे प्रेम भाव रखें, लेकिन आसक्त न हों; जैसे मुर्गाबी पानी में रहते हुए भी जब उड़ती है तो पूरी तरह खुश्क होती है।''

- एक दिन संकेत करने लगे–

''ज़र्रे ज़र्रे में वही समाया हुआ है। उसी का नूर सब जगह छाया हुआ है।'' फिर कहा–

बेहिजाबी ये कि हर ज़र्रे में है जलवा अयां।
पर्देदारी ये कि सूरत आज तक देखी नहीं॥

- अपनी ड्यूटी की पाबन्दी के बारे में आप अक्सर ताकीद किया करते। एक भक्त से फरमाने लगे–

''करने लायक सभी काम मशगूल हो (पूर्ण एकाग्रता से) करते रहें; लेकिन उसी के लिये।''

- ठाकुर-प्रभु एक बार फ़रमाने लगे–

''कोई साहब किन्हीं महात्मा के पास पहुँचे और उन्हें अपना शिष्य बना लेने का आग्रह किया। महात्मा जी ने उनसे पूछा कि

तुम्हारे बाल-बच्चों का क्या होगा; तो वे कहने लगे कि मुझे उनसे कोई लगाव नहीं है। माता-पिता, भाई-बहिन आदि के लिये पूछने पर भी उन्होंने वही जवाब दिया कि मुझे तो किसी से प्रेम नहीं है। इस पर महात्मा ने कहा कि जब आपको किसी से भी प्रेम नहीं है, प्रेम का अंकुर ही नहीं है, तो हम तुम्हें शिष्य बना कर क्या करेंगे। हम तो केवल नाली मोड़ने वाले हैं; यदि प्रेम का पानी ही नहीं है, तो हम क्या करेंगे।''

फिर फ़रमाने लगे–

''प्रेम ही परमेश्वर है। हृदय प्रेम से भरता जाये तो प्रभु की बड़ी कृपा समझनी चाहिए।''

- एक बार किन्हीं साहब ने आपसे साधना सम्बन्धी कठिनाइयों का ज़िक्र किया। आप शान्त हो सुनते रहे; फिर प्रेम से कहने लगे–

''अरे साहब! जब आप छोटे से बछड़े को भी बाँधते हैं तो कितना जोर पड़ता है, वह कितनी उछल-कूद करता है। फिर जब हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर को बाँधने चले हैं, तो कठिनाई नहीं आयेगी क्या?''

फिर फ़रमाया–

''प्रभु प्रेम से रीझते हैं, सहज ही मिल जाते हैं। अपना आपा मिट जाये तो वह प्रकट ही है।''

अपनी खुदी ही पर्दा है, दिलदार के लिये,
वर्ना कोई नक़ाब नहीं, उस यार के लिए।
उल्टी ही चाल चलते हैं, दीवाने गाने इश्क,
आँखों को बन्द करते हैं, दीदार के लिये॥

''प्रेम उसकी सबसे बड़ी देन है, इसमें सब कुछ आ जाता है।'' एक अन्य अवसर पर कहने लगे–

''वह बड़ा कारसाज है। उसकी कृपा हर वक्त बरस रही है। उसे प्रेम से ग्रहण करते रहो।''

- एक सज्जन को कहा कि ''उसके यहाँ कोई कमी नहीं है, कमी अपने में है, अपनी ही तैयारी पूरी नहीं है, इसे देखें।''

तेरे करम से बेनियाज कौनसी शह मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग है, तेरे यहाँ कमी नहीं।।

फिर कहने लगे कि ''उसकी कृपा का कैसे बखान करें। उसकी महिमा अपार है;'' और फिर भावपूर्वक सुनाया–

इक तेरी चश्में करम ने साकिये बन्दा नवाज।
ज़र्रे को खुर्शीद, औ कतरे को दरिया कर दिया।।

- एक अन्य मौके पर प्रबोधन करते हुए समझाया– ''ईश्वर परमपिता है, वह अपने बच्चों को तकलीफ में कैसे देख सकता है। जैसे माता-पिता खुद तकलीफ सह कर भी अपने बच्चों को तकलीफ नहीं होने देते; लेकिन फोड़े को तो साफ करना ही पड़ता है। जो कर्म बाँध कर लाये हैं, उनका हिसाब तो पूरा चुकाना ही पड़ता है।''

- ठाकुर-प्रभु हमेशा कृतज्ञता से भरे रहते। अपनी तकलीफों से बेखबर हो सदा ईश्वर का गुणगान किया करते। उसकी इनायत और मेहरबानियों का बखान करते नहीं अघाते। एक दिन बताने लगे-

''एक फकीर हर वक्त खुदा का शुक्रिया अदा करता रहता। अचानक उसके सारे शरीर में फोड़े हो गये, जिनमें कीड़े रेंगने लगे; फिर भी फकीर 'शुक्र है! शुक्र है!' पुकारता चला जाता। किसी राहगीर ने जब उसकी यह हालत देखी तो उससे पूछा- कि बाबा! अब किस बात का शुक्रिया अदा कर रहे हो? यह सुन फकीर ने सिर उठाकर ऊपर देखा। अपनी जुबान बाहर निकालकर बोला- 'अभी यह सलामत है, इसके लिये उसका शुक्र भेज रहा हूँ।' राहगीर फकीर के पैरों पर गिर पड़ा और मिन्नत कर उन्हें अपने साथ ले गया और पुख्ता इलाज करवा कर उन्हें भला चंगा कर दिया।''

- आपके एक परम स्नेही भक्त की धर्मपत्नी का जब अचानक देहावसान हो गया तो उन्हें सान्त्वना देते हुए आपने कहा–

''मौत व जिन्दगी भगवान के हाथ में है। इसमें कोई दखल नहीं दे सकता। भगवान जो करता है, अच्छा करता है। इसकी मसलहत (रहस्य) वही जानता है। वह चाहे तो इससे भी अच्छा खिलौना दे दे। यह सब उसकी मर्जी पर है। उन्होंने बहुत अच्छे कर्म किये हैं जिससे वे बैकुण्ठ गई हैं। भगवान उन्हें शान्ति देंगे।

- एक भाई को साधना सम्बन्धी संकेत करते हुए कहा– ''जिस तरह बहुरूपिया मेहतर, राजा आदि के सभी पार्ट बखूबी अदा करता है, लेकिन अपना असली रूप नहीं भूलता, वैसे ही हमें दुनिया में रहना चाहिये। सारे आचार-व्यवहार यथायोग्य पूरे करते हुए, मन कमलवत् निर्लिप्त रहना चाहिए।''

- मन की निगरानी के बारे में समझाते हुए कहने लगे– ''इस मन की हर वक्त चौकीदारी करते रहने की जरूरत है, लेकिन इसके साथ जोर-जबरदस्ती नहीं करना चाहिये। यह बड़ा मुँहजोर घोड़ा है। ज्यादा सख्ती की तो पछाड़ मार कर ऐसा गिराता है कि फिर उठना मुश्किल हो जाता है। इसे तो समझा-बुझा कर सन्मार्ग पर लगाते रहना चाहिये।'' फिर फरमाने लगे–

''सारे साधन-भजन इस मन को सुलझाने के लिये ही तो हैं। यह काम जीते जी हो जाना चाहिये। काम में मशगूल रहना अच्छा है। इससे मन को फालतू गढ़न्त रचने का मौका नहीं मिलता। जब यह एक काम से थक जाये, तो किसी दूसरे काम में लगा देना चाहिये।''

- एक अन्य अवसर पर एक अन्तरंग भक्त से कहने लगे– ''मन का पूरा भरोसा नहीं करना चाहिये। यह कभी भी धोखा दे सकता है, इसलिये निगरानी रखनी चाहिये।'' फिर बोले-

मन को मृतक जान कर, मत करिये विश्वास।
साधु तब लगि भय करे, जब लगि पिन्जर साँस॥

''ख़याल करते रहना चाहिये कि यह मन क्या कर रहा है? बार-बार मन को देखते रहने से भजन में तरक्की होती है। जब मन गुरु

की शरण जाता है, तो सहज ही अन्तर्मुखी होने लगता है।''

- एक अन्य अवसर पर फ़रमाने लगे– ''यदि फालतू विचार कम होने लगें, तो समझें भजन में तरक्की हो रही है। लेकिन इनसे ज़्यादा लड़ना नहीं चाहिये, होश बना रहना चाहिये। ये (फालतू विचार) आकर प्रभु के प्रकाश रूपी अग्नि में भस्म होते रहते हैं।''

''बीती बातों का पछतावा नहीं करना चाहिये। बुरे विचार आवें तो गुरु या ईश्वर का ख़याल कर लेना चाहिए, ये हट जायेंगे।''

- एक दिन फ़रमाया–

''उसकी याद में सोने से रात-भर सींतमात (मुफ़्त) का भजन हो जाता है। सवेरे उठते ही अपने आप उसका ख़याल आता है।''

- एक बार सत्संग में कहा–

''उसके ख़याल में रहने से सब पर सहज ही उसका प्रभाव पड़ता है। जैसे कोई आदमी इत्र लगाकर निकलता है तो सब जगह अपने आप ख़ुशबू फैल जाती है।'' फिर कहा–

''उसके प्रकाश की धार अपने आप उतरती रहती है, जैसे माँ के स्तन से दूध। ज्योंही बच्चा आँचल मुँह में लेकर चूसता है तो तुरन्त दूध उतर आता है, भले ही माँ गहरी नींद में सोई हो और उसे खबर भी न हो।'' (होनी चाहिए पुकार)।

- साधना सम्बन्धी कमियों का ज़िक्र करने पर आपने बताया ''अपने ऐब नज़र आते रहें और उसकी याद बनी रहे, यही काफी है। हर हाल में उसकी याद कायम रहनी चाहिये, मन ही मन राम का नाम लेते रहना चाहिये, वो राम जो सब जगह रमा हुआ है।''

- एक बार परिजनों के प्रति व्यवहार का ज़िक्र करते हुए कहने लगे–

''पिता अपने पुत्र में, पुत्र पिता में, स्त्री पति में, पति पत्नी में ईश्वर दर्शन करते रहें; सभी में उसका दर्शन करें, फिर सब ईश्वरमय हो जायेगा।''

दर दीवार दरपन भये, जित देखूँ उत तोय।
कांकर पाथर ठीकरी, भये आरसी मोय।।

- किसी भाई ने ध्यान के बाद बताया कि ध्यान के समय उन्हें अनेक विचार आते रहे, तो आप कहने लगे–

''इन्हें निकलने दें, खाली होने दें। बस देखते रहें। फिर, कहने लगे– ''एक याद में सब कुछ आ जाता है।''

- जब एक प्रेमी भक्त ने, ''मैं तुझे पाने की हरदम जुस्तजू करता रहूँ'', गज़ल गाकर सुनाई तो कहने लगे– ''ऐसे ही भाव बनते जाने चाहिए। इसमें सब आ जाता है।''

- एक प्रेमी सज्जन से फ़रमाने लगे–

''मुसीबत में घबराना नहीं चाहिये। जैसे घर में कोई बच्चा बीमार हो, तो सारे घरवालों का ख़याल उसकी ओर रहता है, वैसे ही जब हम पर कोई मुसीबत आती है, तो उस समय भगवान हमारा ज़्यादा ख़याल रखते हैं।''

- एक दिन एक भक्त ने जब आपसे पूछा कि ईश्वर की याद हर समय क्यों नहीं रहती, तो आप मुस्करा कर कहने लगे ''यदि आप मेले में जा रहे हों और आपकी जेब में हजार रुपये के नोट हों, तो मेले के खेल-तमाशों में भी आपका ध्यान अपनी जेब पर ही बना रहेगा। ऐसे ही जब इसकी कीमत मालूम हो जाती है, तो अपने आप ही याद बनी रहती है।'' इसी सन्दर्भ में एक अन्य मौके पर आप फरमाने लगे–

''याद तो दूसरे की की जाती है। अपनी भी कोई याद करता है क्या?''

जब पुनः एक बार याद भूल जाने की आपसे चर्चा की गई तो आप कहने लगे ''यह भी ठीक है। उसे भूल जाने के बाद जब फिर से होश आता है, तो अधिक व्याकुलता होती है, जो अच्छी बात है।''

फिर फ़रमाया- ''याद में बड़ा प्रभाव है। जब कोई दिल से याद करता है तो उधर भी याद शुरु हो जाती है। यदि ठीक से याद किया जाये तो तार से तार जुड़ जाता है। मिलने का-सा आनन्द आने लगता है।''

- एक बार अपने एक भक्त से वार्ता के दौरान स्वयं को उनका अन्तरंग मित्र बताते हुए कहने लगे– ''आपस में मित्रता इसलिये की जाती है कि जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे के काम आ सकें। आत्मिक मित्रता भी इसी उम्मीद से की जाती है कि इस जरिये ईश्वर की ओर से फैज़ बरसे और हमें भी उसमें से कुछ हिस्सा मिल सके।''

- एक भाई जब अपनी पत्नी के विरोधी स्वभाव का आपसे जिक्र कर रहे थे, तो आपने मुस्करा कर फरमाया, ''वे तो आपके मुगदर हैं, मुगदर!'' फिर एक सेठ जी का किस्सा सुनाया, जिनका नौकर हर काम उल्टा ही करता, फिर भी वे सब सहन करते। यह देख एक दिन उनका दोस्त कहने लगा कि आप इसे निकाल क्यों नहीं देते। सेठ जी बोले कि भाई यह तो मेरा अपने गुस्से के साथ जोर आजमाइश का मुगदर है। जैसे पहलवान ताकत बढ़ाने के लिये मुगदर घुमाता है, मैं भी इससे जोर-आजमाइश करता हूँ।

जब एक बार पुनः उनके स्वभाव और आपसी कलह की ठाकुर-प्रभु से उन्होंने शिकायत की, तो आप प्रेम से समझाने लगे- ''आपस में बड़े प्रेम से रहा करो। वे बड़े साफ-हृदय की हैं। ऐसा समझा करें कि यदि उन्हें दुःख होता है, तो मुझे भी दुःख होता है। प्रेम सब से बड़ी चीज़ है।''

एक दिन इन्हीं भाई को कुछ उदास देख कर कहने लगे ''हमेशा खुश रहा करो, फूल की तरह खिले हुए, ताकि हम भी आपको देख कर खिल उठें।'' फिर फरमाने लगे- **''हर हाल में खुश रहना, यह है खुदा परस्ती।** यही सबसे बड़ी साधना है।''

- एक बार बताया– ''सदा अपने से नीचे वालों को देख कर

सन्तोष मनावें। ऊपर वालों को देखते रहने से अपना सुखचैन चला जाता है।'' फिर कहा- ''हर समय यही भाव रहे कि हे प्रभु! आपकी इच्छा पूरी हो!।''

राजी-ब-रजा रहना सबसे बड़ी इबादत है।
राजी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा प्रभो!।।

- आप इच्छाओं को न्यूनतम रखने का अक्सर संकेत करते। अपने एक प्रेमी को पत्र लिखवाते समय आपने कहा–

आरजुओं ने हमारी हमको बन्दा कर दिया,
वरना हम खुदा थे, गर दिले बेमुद्दआ होता।

चाह चमारी, चूहड़ी, अति नीचन ते नीच।
तू तो पूरण ब्रह्म था, जो चाह न होती बीच॥

- ''हमारी इच्छाओं ने ही हमें कैद कर रखा है।'' एक अन्य अवसर पर अपने रागद्वेष को कम करते चले-जाने की ओर इशारा करते हुए आपने फरमाया --- ''हमें रगबत और नफरत (राग और द्वेष) दोनों से बचना चाहिये। यही हमें भटका रहे हैं।''

- एक बार दोपहर को स्नान के पश्चात् गुरु-शिष्य के सम्बन्ध में प्रबोधन करते हुए बोले–

''यदि शिष्य श्रद्धालु हो और गुरु अयोग्य भी हो तो भी वह अपनी वस्तु पा लेता है। इसी तरह यदि गुरु समर्थ हो और शिष्य अयोग्य भी हो तो भी वे उठा ले जाते हैं। लेकिन दोनों ही बातें हों तो सहज ही सब काम बन जाता है। अपने भाव से वह प्रकट होता है, जैसे एकलव्य ने मिट्टी की मूर्ति में से प्रकट किया था।''

- एक अन्य अवसर पर फ़रमाया–

''श्रद्धापूर्वक इस मार्ग पर चलने पर तार से तार जुड़ जाता है और बिजली का सा असर होता है। केवल ख़याल बन जाना चाहिये, फिर तो सब अपने आप चलने लगता है।''

- एक दिन एक भक्त ठाकुर-प्रभु से अपने किसी मित्र की दिलेरी का ज़िक्र करते हुए बोले कि उनका कहना है–

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तदबीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है।

इस पर आप बोले कि नहीं साहब! हमें तो सही यह लगता है–

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहे।
कि दाना ख़ाक में मिलकर, गुले-गुलज़ार होता है।।

''आपा विसर्जित होने पर सभी कुछ हो जाता है।''

- आप सदा कृतज्ञता से भरे रहते। आपको पुरानी खाँसी और कफ़ की शिकायत थी। सवेरे जब सोकर उठते तो खूब खाँसी आती और कफ़ निकलता। खाँसी रुकने पर आप बड़े शान्त भाव से कहते– ''प्रभु की कितनी कृपा है। रातभर आराम से सोता हूँ; सुबह जब सोकर उठता हूँ तब खाँसी आती है और कफ़ निकल जाता है।'' ठाकुर साहिब अपने पुलिस सेवाकाल के कई अद्भुत प्रसंगों का जिक्र करते, जिनमें अपने गुरु-भगवान की महिमा का अनवरत बखान होता। ''गुरु भगवान सब तरह रक्षा करते हैं। सारे काम सुलझने लगते हैं। एक शरणागति में सब कुछ आ जाता है।''

- अपने गुरु भगवान के दर्शनों का वर्णन करते हुए आप एक बार विभोर हो कहने लगे–

''मुझ में कोई गुण न होते हुए भी उन्होंने मुझे अपना लिया, कैसे उनकी दया का बखान करें। वे नुक्तानवाज़ हैं; पता नहीं कौन सी बात उन्हें भा जाती है। न जाने कौन से गुण पर दयानिधि रीझ जाते हैं।'' सुनाते हुए गद्गद् हो उठे, नेत्रों से अश्रु ढुलक गये।

- आप अपने सद्गुरु भगवान के तसव्वुर में मगन रहते। अपना नाम तक भूल जाने का उल्लेख करते हुए फरमाते– ''रामसिंह तो न जाने कब का मर चुका। वह अब है ही कहाँ!''

- एक बार आपने फ़रमाया ''गुरु भगवान के पावन दर्शनों के बाद जब मैं एक दिन चौपड़ से इक्के पर बैठकर रवाना हुआ, तो घोड़ा हाँकते हुए ताँगे वाले ने ग़ज़ल गाई–

तेरे इश्क का ये असर देखता हूँ,
तरक्की पे दर्दे ज़िगर देखता हूँ।
समाया है जब से तू मेरी नज़र में,
जिधर देखता हूँ, तुझे देखता हूँ।।

यह सुन मुझे लगा कि गुरु भगवान की ओर से यह तेरे लिए पैगाम आया है। मुझे लगने लगा कि अरे तू तो वैसे ही चलता है, जैसे गुरु भगवान चलते हैं, वैसे ही देखता है, जैसे गुरु भगवान देखते हैं... ऐसी हालत हो गयी।''

- बेगरज़ (निष्काम) सेवा को आप सबसे बड़ी साधना बताते। अपने कुछ भक्तों के सेवा-भाव की आप मुक्तकण्ठ से प्रशंसा किया करते। फरमाते- ''सेवाभाव बड़ी इबादत (साधना) के बाद आता है। सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। लेकिन यह बेग़रज होनी चाहिये।''

''इबादत बजुज ख़िदमते खल्क नेस्त।''
(दुनिया की सेवा सबसे बड़ी इबादत है।)

- एक दिन किसी पक्षी को देख आप अपने एक प्रेमी भक्त को कहने लगे ''मैं जब एक दिन गुरु भगवान के साथ फतेहगढ़ की सड़क पर जा रहा था तो इस पक्षी की आवाज सुन आपने पूछा कि 'फाक्ता (कमेड़ी) क्या बोल रहा है।' मैंने अर्ज़ किया कि यह 'केशव' तू! केशव तू! पुकार रहा है। इस पर आप हँस कर फरमाने लगे यह बोल रहा है, 'एक ..... तू ! एक..... तू!' मुझे यह सुनकर बहुत आनन्द आया। अब जब भी इसे सुनता हूँ तो गुरु भगवान की याद आती है।''

आपके श्रीमुख से कई बार ' तू ही तू' का मधुर उच्चारण हुआ करता था।

- जाड़े के दिनों में एक बुज़ुर्ग आपके सामने बिराजे हुए थे। दोपहर के बारह बजे, पास ही में जब सायरन की तेज आवाज़ देर तक बजती रही तो वे सज्जन बेचैन हो आपसे कहने लगे कि कैसी वाहियात आवाज़ है। आप मुस्करा कर उनसे बोले ''अजी साहब ! आप इसे एक लम्बे 'ओम' की आवाज़ क्यों नहीं मान लेते। हर खट-खट, भट-भट में उसी का तो शब्द हो रहा है।''

- एक बार पूज्य डॉ. हरनारायणजी सक्सेना साहिब के घर सत्संग होने पर उठते हुए आपने फ़रमाया–

नसीम जागो, कमर को बाँधो, उठाओ बिस्तर, कि रात कम है।

- एक अन्य मौके पर अपने प्रेमी भक्त को सचेत करते हुए बोले–

''बटाऊ बीरा बाट घणी, दिन थोड़ो रे।'' (पथिक ! रास्ता काफी लम्बा है। समय बहुत कम है।)''

- अपने भक्तों के हर भाव को आप पढ़ते रहते। कभी कहते- ''आजकल बहुत याद करते हैं आप!'' कभी संकेत करते ''बहुत याद हो रही है साहब!''

सुराही में से काँच के गिलास में ठंडा पानी भरकर पेश किया जाता तो दुआ देते हुए फरमाते - ''कैसी नियामत है! गले में ठंडा धोरा सा बंध जाता है। भगवान भला करे आपका।''

- आपके एक अज़ीज़ ने अपनी धर्मपत्नी के आकस्मिक निधन के बाद जब आपसे कहा कि पत्नी की याद आती रहती है और स्वप्न में भी उनका ख़याल रहता है, तो आपने फरमाया- ''उनके लिये रुहानी गिज़ा पहुँचानी चाहिये, यानी ईश्वर से उनकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करनी चाहिये।''

इन्हीं भक्त से एक बार आपने कहा- ''जब भगवान का सहारा ले लिया, तो फिर उसी की मर्जी पर निर्भर हो जाना चाहिये, इसी में अपना भला है।'' इन्हीं भक्त से आप एक दिन कहने लगे- ''यह

संसार भगवान का सुन्दर बगीचा है। तरह तरह के फूलों से यह महकता रहता है। सन्त इस बाग के बागवान हैं। जब लोग इस बगीचे को गन्दा करते हैं, तो वे इसे साफ करके फिर से महका देते हैं।''

- एक अन्य अवसर पर उनसे बोले–

''जब मन में बुरे विचार आवें तो प्रार्थना करें और कहें कि प्रभो! आपकी इच्छा पूर्ण हो। इससे मन शान्त हो जायेगा।'' फिर फरमाया- ''सबमें उसी की मौजूदगी देखें। सब उसी की देन समझें। उसकी प्रकृति की रचना को देख देख कर उसकी कृपा का एहसास करें। इससे मन उसकी याद में डूबने लगेगा।''

- एक दिन आप अपने एक प्रेमी भक्त से फ़रमाने लगे–

''कुछ लोग संसार में चीनी की बोरी भर कर लाते हैं और रेत की बोरी भर कर ले जाते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो रेत की बोरी लेकर आते हैं और अपनी लगन से चीनी की बोरी भर कर लौटते हैं। कुछ लोग अपनी पूँजी चौगुनी कर ले जाते है; कुछ इसे यों ही गवाँ देते हैं और कई तो ऋणी होकर वापस लौटते हैं।''

यह संसार हाट बनिये का, सब जग सौदा लायो।
चातुर माल चौगुना कीन्हा, मूरख मूल गँवायो॥

- एक प्रेमी भक्त ने आपसे अर्ज़ किया- ''महाराज- गुरु भगवान होते हैं क्या?''

आपने उत्तर में फ़रमाया- ''गुरु भगवान नहीं हैं, गुरु के हृदय में भगवान बिराजते हैं। जब भगवान को कोई बात कहनी होती है तो वह गुरु द्वारा कहलवाते हैं।''

जब उन्होंने अर्ज़ किया कि ''अब मैं आप ही की शरण में हूँ,'' तो ठाकुर-प्रभु प्रेमपूर्वक कहने लगे - ''साहब! यदि मैं इस लायक नहीं हुआ तो मेरे गुरु भगवान सम्हालेंगे, नहीं तो उनके गुरु महाराज! यह कड़ी आख़िर में उसी भगवान से जुड़ी हुई है।''

उन्हीं सज्जन ने एक बार आपसे अर्ज़ किया- ''महाराज- जीवन का लक्ष्य क्या है?'' आप थोड़ी देर मौन रहे, फिर फरमाया– ''बस उसकी याद रहे।'' उन्हें इस उत्तर से संतोष नहीं हुआ और फिर अर्ज़ किया कि- ''महाराज पुस्तकों में तो लक्ष्य भगवत् प्राप्ति लिखा है।'' ठाकुर-प्रभु ने मुस्करा कर उत्तर दिया- ''ज्योंही भगवत् प्राप्ति का अभिमान आया कि भगवत् प्राप्ति गई! बस उसकी याद रहे।''

उन्हीं सज्जन ने फिर अर्ज़ किया कि- ''महाराज अपने ग्रन्थों में लिखा है कि मनुष्य 'ब्रह्म' है, तो ठाकुर-प्रभु बड़े प्रेम से बोले - ''पहले मनुष्य तो बन जाओ। फिर कहा– **'तरने को अधीनता, डूबन को अभिमान।''**

उन्हीं भक्त से आप एक बार कहने लगे- ''जब परमात्मा किसी के दोष प्रकट नहीं करता तो हमें क्या हक है कि हम दूसरों के भेद खोलें?''

- एक प्रेमी भक्त ने अपने किसी सम्बन्धी के उनके साथ किये दुर्व्यवहार का ज़िक्र किया और उनसे कोई सम्बन्ध न रखने की इच्छा जताई। इस पर आपने फरमाया कि ''कोई आप से अकारण दुश्मनी करे और आपका बुरा करे तो आप उससे अलग रहने की कोशिश करें। लेकिन कभी उसकी भी सेवा करने का मौका मिले तो जरूर करें और फिर अलग हो जायें।''

एक अन्य अवसर पर उन्हीं भक्त से आपने फ़रमाया-

''जैसे किसी बड़े आदमी से पहचान होने पर हमारे बड़े-बड़े काम निकल जाते हैं, वैसे ही जिनका उससे सम्बन्ध है उनके, उससे जुड़ जाने पर, न जाने कौन-कौन से काम बन जाते हैं।''

उन्हीं भक्त ने जब एक बार आपसे पूछा कि कभी किसी पार्टी आदि में जाना पड़े तो क्या करें? आप कहने लगे ''अजी साहब! लड़ाई में जाते समय जैसे कवच पहन लेते हैं, वैसे ही अपने गुरुदेव की याद का कवच धारण कर लेना चाहिए।''

एक अन्य मौके पर जब उन्होंने ठाकुर-प्रभु से पूजा में मन न लगने का जिक्र किया तो आपने फरमाया - ''अपना मन गुरु को सौंप दें। पूजा में आप अपने साथ मुझे भी बिठा लिया करें।''

एक दिन आप कुछ अस्वस्थ थे। नाक से पानी टपक रहा था। यह देख ये भक्त कहने लगे कि महाराज! आपकी तबीयत खराब है? तो आप स्नेह से बोले- ''साहब! जब गाड़ी लेट हो जाती है, तो उसकी रफ्तार तेज़ कर दी जाती है।''

- आपकी जमीनों के मुकदमों के सिलसिले में एक दिन आपके भतीजे (भाई बद्रीसिंह जी) बड़े परेशान और उदास दिखाई दिये। बातचीत के दौरान आप उनसे कहने लगे, ''राजपूत होकर क्या फ़िक्र करते हो! अरे मौत से बढ़कर तो कुछ नहीं होगा!'' यह सुन वे शान्त और आश्वस्त हो गये।

- एक बार किन्हीं महाशय से बातचीत में जब आपने उनकी तनखाह के बारे में पूछा तो वे बोले कि तनखाह को तो 150 रूपट्टी ही मिलती है, लेकिन ईश्वर कृपा से ऊपर की आमदनी अच्छी हो जाती है। यह सुन आप गम्भीर स्वर में बोले ''वाह! तनखाह तो रूपट्टी हो गई और रिश्वत की कमाई ईश्वर की कृपा! यह कैसा सोच है! बरकत तो मेहनत की कमाई में ही है।''

- एक दिन एक सज्जन आपसे मिलने पहली बार सिटी पैलेस पधारे। आपने हाथ जोड़ कर बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। आगन्तुक सज्जन जब आपके चरण स्पर्श करने के लिये झुके तो आप बोले–

''रहने दीजिये इन पैरों में और आपके पैरों में कोई फ़र्क़ नहीं है।'' फिर पास ही तख़्त पर पड़ा आसन उक्त सज्जन को देते हुए बोले–

'बिराजिये!' और खुद भी उनके पास ही बैठ गये। फिर पूछा– ''बन्दा आपकी क्या ख़िदमत कर सकता है।'' वे बन्धु आपकी सरलता व सादगी देख कर अवाक् रह गये। फिर आपको कुछ भावपूर्ण भजन सुनाते रहे।

- एक दिन शाम को लाला मातूराम जी (हकीम सा.) आपसे मिलने सिटी पैलेस पधारे। उस समय कूल्हे की हड्डी टूट जाने के कारण उन्हें (श्री मातूराम जी को) तकलीफ थी। सत्संग के बाद जब वे जाने को खड़े हुए तो ठाकुर साहिब ने तुरन्त उठकर उनके जूते लाकर उनके पैरों के पास रख दिये। लाला जी चौंक कर बोले 'हुजूर! यह आपने क्यों किया! यह तो हमारी बेअदबी है'। इस पर ठाकुर-प्रभु प्रेम से बोले–

"हमारे अज़ीज़ तकलीफ में हों और हम बैठे रहें, ऐसा कैसे होगा साहब!" यह सुनकर हकीम साहब की आँखें आनन्द से भीग गईं।

लाला मातूराम जी साहब बड़े चिन्तनशील महापुरुष थे। आपको धूम्रपान का शौक था। अतः ठाकुर साहिब उनके लिये स्वयं जाकर बाज़ार से बीड़ी-सिगरेट खरीद कर लाते और लालाजी को पिलाते। एक दिन जब वे आये तो आपने उन्हें सिगरेट का पैकेट व माचिस पेश की। उस दिन सिगरेट जलाने व पीने में जब उन्हें कुछ संकोच हुआ तो आप बड़े स्नेह से बोले " पीजिये ना साहब! जब आप पीते हैं तो मुझे इसका धुँआ बहुत अच्छा लगता है।" सुनते ही लाला जी ने गद्‌गद् हो सिगरेट जला कर कश खींचा और प्रेम के महासागर में खो गये। वे अक्सर भावविभोर हो फरमाते, "ठाकुर साहिब जैसा कौन हमें चाहेगा! उन्हें हमारे ऐबों तक से प्यार था! कैसे उनकी दया का जिक्र करें!"

- एक बार स्व. भाई रविन्द्रसिंहजी ने किन्हीं पंडित जी के घर गुरुवार का साप्ताहिक सत्संग रखवाया। जब ठाकुर साहिब पधारे तो पंडित जी महाराज ने बड़ी श्रद्धा से माला, तिलक, श्रीफल आदि से आपका वन्दन किया। ठाकुर-प्रभु ने बड़े प्रेम से सब विनम्रतापूर्वक स्वीकार किया। फिर सत्संग का आनन्द रहा। अगले दिन जब भाई रविन्द्रसिंहजी सन्ध्या को सिटी पैलेस पधारे तो आप विनोदपूर्वक उनसे बोले, "वाह साहब! कल तो आपने पंडित जी महाराज से ख़ूब पुजवाया!" और हँसते रहे, फिर शान्त हो बोले- "अपने यहाँ यह सब नहीं किया जाता है।"

- एक अन्य अवसर पर कहने लगे– ''भगवान कहते हैं, दुनिया करो, मुझे चाहो!''

- एक बार किन्हीं सज्जन से बोले–

''अन्धेरी काली रात में मानो हमारा बेड़ा तूफ़ानी समुद्र में डाल दिया गया है। इसमें हमें पूरी सावधानी से बैठना है, ताकि हमारा दामन तर न होने पावे।''

- ध्यान-साधना के सन्दर्भ में कहने लगे–

''सच्चे भक्त के लिये ध्यान-भजन आसान है। इसमें बस अपने आपको भुला देना और गुरुमय हो जाना है। यह ख़याल बाँधना है कि प्रेम की धारा प्रवाहित हो रही है। साथ में बैठने वालों को भी धीरे-धीरे इसका अनुभव होने लगता है। इसके लिये कुछ कहने सुनने की जरूरत नहीं है। अपने आप असर होने लगता है, आनन्द आने लगता है।''

- एक प्रेमी भक्त से आप फ़रमाने लगे–

''असल बात यह है कि समर्पण का भाव आ जाये तो एक इशारे में सब काम बन जाता है। सद्गुरु में फना हो जाने पर सब कुछ अपने आप हो जाता है।''

एक अन्य अवसर पर उनसे फ़रमाने लगे–

''जब शरीर में ताकत होती है, शरीर खूब काम करता है; तब तो इसके लिये उसका शुक्रिया अदा नहीं करते। लेकिन जब इसका बल घट जाता है, कोई अंग ठीक से काम नहीं करता, तब इसके महत्त्व का हमें पता लगता है।''

- मेहनत की कमाई और खरे पसीने का अन्न खाने के लिये आप संकेत करते रहते। एक बार फरमाने लगे–

''खरी कमाई का अन्न खावें। खरी कमाई में ही बरकत है। अपनी कमाई का कुछ हिस्सा जरूरतमन्दों के लिये ज़रूर निकालना

चाहिये।'' फिर कहा–

''गृहस्थ के सभी धर्मों का पालन करते हुए, आसानी से परमार्थ कमाया जा सकता है।''

प्रेम के सन्दर्भ में बोले– ''प्रेम की डोर जुड़ी रहे तो दूरी का सवाल नहीं रहता; जहाँ हैं वहीं मिलना हो जाता है।''

भोजन के समय ध्यान के सन्दर्भ में फ़रमाने लगे–

''भोजन चबा-चबा कर उसकी याद में करना चाहिये, इससे खाने का जो रस बनता है, उस में प्रेम का ज़ज़्बा समा जाता है, जो नस-नस में पहुँच कर उसकी याद दिलाता है।''

''ज्यादा भोजन करने से वह तामसी हो जाता है, इसलिए थोड़ा पेट खाली रखना चाहिये।''

- एक अन्य अवसर पर फ़रमाया–

''उसकी याद में भोजन करने से वह भजन हो जाता है। भोजन और शयन दोनों समय उसकी याद में डूबने से जल्दी तरक्की होती है। परमेश्वर की याद में सोने से नींद में भी भजन चलता है और वह सीतमात (बिना कुछ किये प्राप्ति) का भजन हो जाता है। सुबह उठने पर उसकी याद आती है।''

- एक भक्त से फ़रमाया–

''सबसे बड़ी पूजा उसकी याद बनाये रखना और उसकी रज़ा में राजी रहना है।'' फिर कहने लगे-''हर हालत में प्रसन्न रहना और अपने आपको उसकी याद में भुला देना चाहिए। हरदम उसी का ध्यान रहे।''

- एक बार फ़रमाने लगे–

''यदि ईश्वर कृपा से मुकम्मिल (पूर्ण) गुरु मिल जायें तो फिर अपने आपको पूरी तरह उनके हवाले कर देना चाहिये। खुद को हर तरह उन्हीं की इच्छा के सुपुर्द कर दें।''

- एक अन्य अवसर पर फ़रमाया–

''यदि आदमी अपने उसूल का सच्चा हो तो सब कुछ हो जाता है। यदि एक भी गुण का पूरी तरह पालन करें तो वह सब कुछ पा सकता है।'' फिर कहने लगे–

''जिसे हम ढूँढ़ रहे हैं, वह भीतर ही तो है। उसका निवास अपने अन्दर ही है। सब घटों में वही बिराज रहा है। लेकिन जिस घट में वह प्रकट होता है, उसी की महिमा है।''

सब घट मेरा साँईया, खाली सेज न कोय।
बलिहारी घट तासुकी, जा घट परगट होय॥

- एक दिन अपने एक प्रेमी भक्त से बोले–

''हमें दूसरों के ऐबों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये; नहीं तो वही दोष अपने भीतर उतर आयेंगे। दूसरे में कमी दिखाई दे तो फौरन अपने अन्दर देखें कि वही बात तुममें तो नहीं है जिसका अक्स दूसरे पर पड़ रहा है।

फिर फ़रमाया– ''निज-कृपा सबसे जरूरी है, ईश-कृपा और गुरु-कृपा तो सदा मौजूद ही है।''

- एक बार एक प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भक्त आपसे कहने लगे कि साहब! मैं चाहता हूँ कि बार-बार जन्म लूँ ताकि देश की सेवा कर सकूँ। इस पर आप मुस्करा कर कहने लगे–

''हम तो इस बात के कायल हैं साहब! कि इस घड़े को इसी जन्म में फोड़ दिया जावे।''

- एक प्रेमी भक्त से फ़रमाया कि सोते समय प्रार्थना किया करो–

1. हे प्रभु! मेरे गुनाहों को माफ कर दो।
2. हे प्रभु! अपनी इच्छा से मुझे चलाओ।
3. हे प्रभु! मेरे गुरु से मेरा प्रेम बढ़ा दो।

- एक दिन प्रातः स्नान करके आप कुर्सी पर शांत बिराजे हुए थे। एक प्रेमी-भक्त सामने बैठे आपको निहार रहे थे। आप कहने लगे- ''शरीर छूटने के बाद आप लोग दुःख मत मनाना। शरीर छोड़ने के बाद तो ताकत कई गुना बढ़ जाती है।''

यह सुन वे बन्धु विह्वल हुए और आपसे कहने लगे कि हुकम! अभी तो हम लोग आपके पास आ जाते हैं, अपना दुःख-दर्द अर्ज़ कर देते हैं और निश्चिन्त हो जाते हैं; आपके शरीर छोड़ने के बाद हम कहाँ जायेंगे। इस पर वे करुणामय नेत्रों से निहार कर बोले- ''फिर इसकी ज़रूरत ही नहीं रहेगी।''

- आपने एक बार फ़रमाया कि लालाजी साहिब (महात्मा श्री रामचन्द्रजी) और चच्चाजी साहिब (महात्मा श्री रघुवरदयालजी) दो शरीर एक आत्मा थे।

- किसी सज्जन के पूछने पर कि मनुष्य को कर्मों का फल यहीं मिलता है या नहीं, तो फ़रमाने लगे-''आप यहीं देख लो। यदि किसी से 'आप' कहोगे तो वह भी आपको 'आप' कहेगा और 'तू' कहोगे तो वह भी 'तू' कहेगा।

- एक सत्संगी से फ़रमाने लगे– ''पहिले अपने अन्दर जो ख़राबी हो गई है उसे ठीक करें और फिर आगे से होने मत दें।

- एक सज्जन ने आपसे अपने प्रति किसी के दुर्व्यवहार की चर्चा की और कहा कि मेरी इच्छा होती है कि मैं भी उनके साथ ऐसा ही करूँ; तो आपने फ़रमाया– ''जैसे को तैसा करना तो **Silver Rule** है, **Golden Rule** तो यही है कि आप बुरे के साथ भी अच्छा व्यवहार करें। यदि आप स्वयं किसी को कष्ट देते हैं तो वह **Iron Rule** है।''

- आपने एक सज्जन से फ़रमाया ''सुबह शाम रोज़ 15-20 मिनट ध्यान किया करें।'' उन्होंने अर्ज़ किया कि महाराज-''यह तो थोड़ा है। बाकी समय क्या दूसरे कामों में लगा रहूँ।'' इस पर आप

फरमाने लगे- ''बाकी समय प्रभु की याद में अपना काम करते रहो। **Work is Worship.**''

इन्हीं सज्जन ने एक दिन अर्ज़ किया कि महाराज - ''मुझे दुनियादारी नहीं आती।'' इस पर आपने मुस्कराकर फरमाया कि - ''दुनियादार सब सिखा देंगे।''

- एक श्रद्धालु प्रेमी भक्त से आपने फरमाया–

(1) सदा सत्य बोलना चाहिये।

(2) दुश्मन का भी बुरा नहीं चाहना चाहिये।

(3) चलते फिरते उसी के ध्यान में रहना चाहिये।

(4) अपनी खुदी मिटा कर गुरू रूप हो जाना चाहिये।

- एक जिज्ञासु भक्त से आप फ़रमाने लगे–

विषय भोग तो विष भोग है। जब हाज़त होती है तो हम पाख़ाना जाते हैं, वहाँ बैठे थोड़े ही रहते हैं। बस इतना ही संबंध विषयों से रखें।

उसी भक्त के पूछने पर कि दुनियावी तरक्की कितनी करनी चाहिये तो आपने फ़रमाया- ''जितनी मुनासिब हो।''

फिर उसी भक्त के यह कहने पर कि महाराज दुनिया में सभी स्वार्थी हैं तो आप फ़रमाने लगे– ''आप भी तो स्वार्थी हैं।''

- एक सज्जन से फ़रमाया- ''जब स्त्री से प्रेम करोगे तो उस (प्रभु) के प्रेम का भी पता पा सकोगे। चच्चा गुरु भगवान फरमाते थे कि जो स्त्री में अधिक आसक्त होते हैं उनको इस तरफ आसानी से मोड़ा जा सकता है।

- एक दिन किन्हीं पुराने सत्संगी बन्धु ने अकस्मात आपसे कहा ''महाराज मुझे भी भगवान के दर्शन करा दीजिये।''

ठाकुर-प्रभु गंभीर हो गये और फिर फ़रमाया ''पहिले हम अपने आपको तो देख लें, भगवान को तो बाद में देखना।''

इसी सन्दर्भ में अगले दिन अन्य भक्त से कहने लगे ''उसे देखने की इच्छा ही हमें उससे दूर कर देती है। बस उससे प्रेम करें। उसी में सब अपने आप आ जायेगा।''

फिर कहने लगे ''साहब हमने तो गुरु भगवान से कभी कुछ नहीं पूछा। सब कुछ उन पर छोड़ उनके आश्रित रहें, उसी में अपने आप रास्ता मिलता गया।'' आगे फ़रमाने लगे– ''वह न कोई क्रिया करता है, न कराता है, फिर भी जो कुछ हो रहा है सब उसी की सत्ता से हो रहा है। इसका अहसास उसी की कृपा पर निर्भर है।''

- एक दिन एक भक्त से फ़रमाने लगे ''हम उसे भूल सकते हैं लेकिन उससे जुदा कभी नहीं हो सकते। उसके बगैर हम पल भर भी नहीं जी सकते। उसकी अनुभूति गुरु-भगवान की कृपा से होती है।

- दुनियादारी के सन्दर्भ में एक बन्धु द्वारा पूछे जाने पर आप कहने लगे ''अच्छा खाओ, अच्छा पहनो, खूब कमाओ, लेकिन मन उस ओर लगाये रखो। दुनिया रूकावट नहीं है, आसक्ति रूकावट है। फिर कहा ''अपना फर्ज़ अदा करना जरूरी है। आत्मिक तरक्की का सम्बन्ध अन्दर से है, बाहर से नहीं। गृहस्थ में रह कर इसे आसानी से कमाया जा सकता है।''

- एक प्रेमी-भक्त ने जब अपनी पत्नी के सन्दर्भ में कुछ कहा तो आप फ़रमाने लगे- ''अपनी धर्मपत्नी को अपना दोस्त समझकर पूरा आदर देना चाहिए। स्त्रियों में सेवा, प्रेम, त्याग व तपस्या मर्दों से ज़्यादा होती है। उन्हीं की वजह से घर-गृहस्थी फलती-फूलती है।''

- एक प्रेमी-भक्त जब आपसे मिलने पधारे तब आप अस्वस्थ थे। उन्होंने आपसे कहा कि पहले आया तब भी आप बीमार थे, अब आया तब भी आप बीमार हैं। ठाकुर-प्रभु मुस्करा कर बोले ''अजी साहब! टाइम कम हो तो रफ़्तार बढ़ानी ही पड़ती है। गुरु भगवान की दया है कि कई जन्मों के संस्कार इसी जन्म में कटवा रहें हैं। वह सूली को सूल में टाल देते हैं। हिसाब तो सबको चुकाना ही पड़ता है। मनुष्य जन्म मिल गया, यही क्या कम है?

- साधना के सन्दर्भ में एक भाई से कहने लगे ''साधन-भजन केवल मैं की मैल मिटाने को है, ताकि वह प्रकट हो सके। वह भीतर ही छिपा बैठा है, प्रेम से प्रकट होता है। एकलव्य ने मिट्टी के पुतले से और प्रहलाद ने खम्बे में से उसे प्रगट कर लिया था।

- एक सज्जन को साधना सम्बन्धी सवाल के बारे में कहा ''यह 'मैं' रूपी अहंकार अच्छे-अच्छों को ले डूबता है। उसका रास्ता बड़ा नाजुक है पग-पग पर पूरे एहतियात की जरूरत है, वर्ना कभी भी धोखा हो सकता है। जन्मों की कमाई पल भर में खो सकती है। अभिमान में अपना भला-बुरा नहीं दिखता है। इसलिए हमेशा उसके शरणागत बनें रहें।''

फिर फ़रमाया ''दुनिया में साधारण आदमी की तरह रहो। रास्ता बड़ा बारीक है, सम्भल कर चलना जरूरी है। किस बात का गुमान करें, जब अपना कुछ भी नहीं है, अपन ही नहीं हैं।''

- ज्ञान के बारे में किन्हीं भक्त को संकेत किया ''अनपढ़ गँवार तो फिर भी समझ जाता है, लेकिन पढ़े लिखों को कौन समझावे! जो ज्ञान से भरे बैठे हैं, वे इस विद्या से खाली रह जाते हैं। उन्होंने पात्र ही उल्टा ले रखा है। जब तक हम अपने को कुछ समझते रहेंगे, तब तक उसके दरबार में रसाई नहीं है। फिर कहा- ''छोटा बन कर ही कुछ हासिल हो सकता है। सादगी जरूरी है। जिसने अपने को मिटा डाला, वही उसे पा सकता है।''

जाहिद खुदा की याद को न भूल चीनहार।
अपने तईं भुला दे, गर तू भुला सके।।

- एक दिन जब कोई प्रेमी आपके चरणों की मालिश कर रहे थे तो उनसे कहने लगे-''इसी भाव से सभी की सेवा-सहायता हो सके, ऐसी कोशिश रहे। सभी में वही विराजमान हैं। बस उसकी याद बनाये रखें, फिर सब कुछ अपने आप होता चला जायेगा। यह सबसे सरल रास्ता है।''

- एक दिन सवेरे जब आप साबुन से हाथ धो रहे थे तो इसके झाग दिखाते हुए कहने लगे ''इन झागों में आस-पास का पूरा दृश्य दिखाई दे रहा है, ऐसे ही परमात्मा संसार के जर्रे-जर्रे में बिराजमान है। जड़-चेतन सब में वहीं समाया है और ये सब उसी में समाये हुए हैं।

- एक बार बुरे ख़याल उठते देख एक सत्संगी बन्धु ने जब आपसे इस बारे में पूछा तो आप फरमाने लगे ''इन्हें उठने दें, इनसे झगड़ा करना ठीक नहीं, इनको अपना काम करने दें। आप अपने काम में लगे रहें। जो भीतर पुराने संस्कार पड़े हैं, वे किसी रूप में बाहर तो निकलेंगे ही।''

- एक बन्धु ने आपसे निवेदन किया कि ईश्वर की ओर मन क्यों नहीं लगता तो आपने फरमाया ''दिल की सच्ची पुकार वह ज़रूर सुनता है। वह प्रेम से बन्धा है। बार-बार पुकारते रहें, अपना काम धैर्यपूर्वक करते रहें और प्रफुल्लित रहें।

- परोपकार के प्रसंग में एक बार कहने लगे ''खड्डे में गिरे आदमी को निकालने से पहिले ख़ुद को सम्भालना होता है, मज़बूती से किनारे पर अपने पाँव जमा कर हाथ पकड़ कर उसे निकालना होता है, वर्ना ख़ुद भी गड्ढे में जा गिरेगा। ख़ुद पुख्ता हुए बगैर किसी की मदद नहीं हो सकेगी।

- सिद्धियों और चमत्कारों के सन्दर्भ में ठाकुर-प्रभु आगाह करते, ''ईश्वर-भक्त को इन बातों में नहीं पड़ना चाहिये; फिर बाजीगर और भक्त में क्या अन्तर रहेगा। इस रास्ते पर बड़े एहतिहात की ज़रूरत है, नहीं तो सब कुछ लुट सकता है।''

- अपनी पात्रता की ओर निगह रखना ज़रूरी है, लेकिन इसका अभिमान पैदा न हो। इस संदर्भ में कहा– ''वह तो सदा बरस रहा है, लेकिन हमारा घड़ा ही उल्टा रक्खा है फिर कैसे भरे। हमारी झोली ही फटी है, तो कैसे इसमें डालें। दिल उसकी याद में लगा रहे तो समय पर सब कुछ होता है।''

- रात्रि सोते समय नींद में भी प्रभु का भजन होता रहे इस संदर्भ में किन्हीं बुज़ुर्ग के पूछने पर आपने एक उदाहरण देकर समझाया– ''एक बच्चा अपनी माँ से सोते समय दूध माँगते हुए रोने लगा। माँ उसे प्यार से समझाती रही कि तेरे पिताजी दूध लेने गये हैं, अभी आ रहे हैं। बालक यह सुनता हुआ कि उसके पिता उसके लिये दूध लेकर आते होंगे, उसके मन में दूध की याद नींद में भी जारी रही। बीच-बीच में जब उसकी नींद खुलती, वह दूध की याद करता। माँ फिर दिलासा देकर सुला देती। सुबह उठने पर बच्चे ने फिर से दूध माँगा और पूछा कि पिताजी दूध ले आये होंगे। इस प्रकार उसे रातभर दूध का ध्यान बना रहा। इसी तरह रात नींद में भी ईश्वर की गहरी याद में सोने से उसका भजन चलता रहता है।''

- एक दिन एक प्रेमी-भक्त से कहने लगे ''सुख-दुःख दोनों हालत में दिल परमात्मा की ओर लगा रहे; जैसे पनिहारिन घड़े सिर पर रखे सहेलियों से बातें करती, हँसती, गाती, मस्ती से चली जाती है, लेकिन उसका ध्यान घड़ों पर ही लगा रहता है, ऐसे ही दुनिया का सब काम करते हुए ध्यान उसी ओर लगा रहे, याद बनी रहे, वही असली ध्यान भजन है।''

- एक अन्य अवसर पर कहा ''दुनिया में सब कुछ देखते हुए, करते हुए, ध्यान उसी की ओर रहना चाहये। मन प्रेम का दास है। जहाँ प्रेम होगा, मन अपने आप वहीं ठहर जायेगा। गोपियों ने इसी प्रेम से उसे बाँध लिया था। प्रेम काफी है, किसी भी तरह इसे उभारते रहें।'' फिर कहा– ''जैसे बिजली का बटन दबाते ही करेन्ट दौड़ने लगता है, वैसे ही उसकी याद है। अपनी ओर से स्विच लगाने भर की देरी है। मन का स्विच जुड़ते ही तुरन्तु उसकी कृपा का करेन्ट शुरू हो जाता है।''

- मृत्यु के संदर्भ में ज़िक्र होने पर आपने संकेत किया– ''इस घर को छोड़कर कब अपने असली घर जाना पड़े, कहा नहीं जा

सकता। जब रास्ते का जेब खर्च हो तो फिर सफ़र की चिन्ता नहीं होती। इसलिए समय रहते सफ़र की भरपूर तैयारी कर लेनी है।''

- सद्गुरु द्वारा शरीर छोड़ दिये जाने के बाद उनकी उपस्थिति, उनकी दया-कृपा बनी रहने के सन्दर्भ में फरमाया– ''समर्थ सद्गुरु तो शरीर छोड़े हुए ही रहते हैं। इस पिंजरे से आज़ाद होने को वे तैयार ही रहते हैं। इसके लिए शिष्य को चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है। अभी तो शरीर के बन्धन के कारण सीमा रहती है फिर तो उससे मिल कर एक हो जाते हैं। पहिले एक रूप में थे, फिर अनेक रूप हो, कण-कण में समा जाते हैं। ताकत कई गुणा बढ़ जाती है।''

फिर कहा– ''सद्गुरु जीवित हो या उनका शरीर न रहा हो, शिष्य सदा अपना दिल उनके दिल से लगाये रहे। शरीर छूट जाने के बाद तो वे हर तरह मदद पहुँचाते हैं। सदा साथ रह कर खोज-खबर रखते हैं। जहाँ चाहो, मौजूद रहते हैं। इसमें शंका की जरा भी गुँजायश नहीं है।''

- एक अन्य मौके पर फ़रमाया– ''मौत को याद रखना भी एक साधन है। बहुत से सन्त तो मौत को याद रख कर ही तर गये। मौत ऐसी सच्चाई है जो आती ही है, फिर इससे डरना क्या? इसकी याद रहे तो संसार से बेदाग निकल जाते हो।''

- एक दिन स्नान से पहिले जब आपकी मालिश हो रही थी और कमर मसली जा रही थी तो उन भाई की ओर मुस्करा कर देखते हुए कहने लगे–

याराने कमसिनों पे, सभी होते हैं फिदा।
जो पीरो हम कमर पे, फिदा हो तो जानिये।।

भावार्थ– सुन्दरियों की पतली कमर (लावण्य) पर तो सभी न्यौछावर होते हैं, किन्तु कोई अपने पीर की कमर (सद्गुरु के सौंदर्य) पर न्यौछावर हो जाय तो ही कमाल है।

- एक प्रेमी-भक्त से कहने लगे– ''यह प्रेम और समर्पण का रास्ता है, भक्त को गुरुमुख होना चाहिये, मनमुख नहीं।

फिर गुनगुनाया–

''जो तू दिन कहे तो मैं दिन कहूँ, जो कहे रात तो कहुँ रात मैं।''

फिर कहा–

कबिरा चेरा सन्त का, दासन का पर दास।
कबिरा ऐसा हो रहो, ज्यों पाँव तले की कास।।

- एक बार फ़रमाने लगे ''मन की फ़रमाइशों की कोई सीमा नहीं है। जिस चीज़ के बगैर काम न चले वही चीज़ ज़रूरी है। इस रास्ते पर बढ़ने के लिए ज़रूरतों को कम रखना अच्छा है।''

इस पर हक़ीम साहब लाला मातूरामजी ने एक शेयर अर्ज़ किया–

सकूने दिल मयस्सर हो, तलब में गैर मुमकिन है।
सकूँ चाहे अगर इन्सां तो अपनी दुनिया मुक्तसर कर ले।।

भावार्थ– इच्छाओं के रहते मन की शान्ति असम्भव है। यदि इन्सान वाकई आन्तरिक शान्ति चाहता है तो अपनी दुनिया छोटी कर ले।

- किन्हीं सज्जन से कहने लगे ''दुनिया में मुर्दे की तरह हो जाना चाहिये, उसे कैसे भी लिटायें– बिठायें, नहलाएँ, धुलाएँ, वह तटस्थ रहता है। फिर फ़रमाया– **''राजी हैं हम उसीमें जिसमें तेरी रज़ा प्रभो!''**

- एक प्रेमी-भक्त ने ठाकुर-प्रभु से सुन्दर स्त्री को देखकर आकर्षित होने की बात कही, तो आप मुस्करा कर बोले ''उसमें भी तो वही बैठा है, जो हमारी नादानी पर हँसता होगा। असल में सारा आकर्षण उसी का है, उसने यह सारे रूप लिये हैं।''

- जब एक भक्त ने अपनी सुपुत्री की बीमारी और उसके प्रति गहरे प्रेम का ज़िक्र किया तो कहा– ''प्रेम उसके शरीर से न होकर उसकी आत्मा से है। इस प्रेम को हम शारीरिक समझ लेते हैं, यही भूल होती है। वही उसमें भी समाया है।''

- एक दिन भाई नारायणसिंहजी से कहने लगे– ''कई बार दुनियावी झंझटों से बचने के लिए भी लोग लंगोटी लगा लेते हैं ताकि इनसे बच जायें और आसानी से उसे पा जायें, लेकिन ऐसा हो नहीं पाता। यह दुनिया उसने किसी मकसद से बनाई है। इसी में रहकर, इसमें से गुज़र कर ही उसे पाना है। दुनियावी कामों को ठीक तरह करते हुए, उसकी तलब पैदा करनी है।''

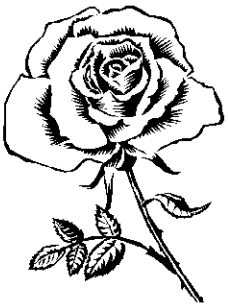

साधना-सूत्र

(ठाकुर-प्रभु के मुखारबिन्द से निःसृत कुछ आध्यात्मिक संकेत)

- दुनिया में रहें किन्तु मुर्गाबी की तरह निर्लिप्त होकर, जो पानी में रह कर भी उड़ते समय बिल्कुल खुश्क होती है। परमेश्वर सदा सब तरह हमारी देखभाल करता है। वह परमपिता है, हमें सुखी देखने के लिये वह सब कुछ करता है। बस हम विश्वास रखकर अपना काम धर्मानुसार करते चलें। बस ख़ुद को उनके हवाले (शरणागत) कर देने की ज़रूरत है। भगवान भाव के भूखे हैं। प्रेम से रीझते हैं। वे नुक्ता-नवाज़ हैं। पता नहीं कब किस बात पर रीझ जाएँ- **"न जाने कौन से गुण पर दयानिधि रीझ जाते हैं।"**

- भक्ति मार्ग सबसे सरल और शीघ्र मिलाने वाला रास्ता है। प्रेम में तद्रूपता से आपा (अहं) पिघल जाता है, जिससे काम तुरन्त बन जाता है।

- प्रेम या भक्ति मार्ग ही ऐसा रास्ता है, जिसमें भटकने का भय नहीं होता। वह हर समय हमारे साथ रहता है। आसानी से सीधे मार्ग से ले जा कर हमें ध्येय तक पहुँचा देता है।

- एक प्रेम में सब कुछ आ जाता है। यदि मुकम्मिल प्रेम हो तो सारी मंजिलें अपने आप तय हो जाती हैं।

- प्रेम ही परमेश्वर है। प्रेम उसकी सबसे बड़ी देन है, जिससे सारी दुनिया चल रही है। पशु-पक्षी तक प्रेम के वशीभूत हो एक-दूसरे का भरण-पोषण करते हैं।

- प्रेम में सब आ जाता है, सारे ऐब छिप जाते हैं। सभी व्यवहार खालिस प्रेमपूर्वक होने चाहिए। स्त्री, बच्चे आदि सबको उसीकी देन,

उसीकी अमानत समझें। इसी नाते सबके प्रति अपना फर्ज़ निभाते चलें। सभी में ईश्वर का दर्शन करें।

- जिस तरह स्त्री अपने ससुराल जाकर पति के सारे परिवार से पति के नाते सम्बन्ध मान लेती है, सभी के प्रति कर्त्तव्य निभाती है; उसी तरह हम सारे संसार का सम्बन्ध उससे जोड़ दें, सबमें उसी की अनुभूति करें।

- खुश-मिज़ाज़ी और जिन्दा-दिली बड़ी दौलत है। जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं। खिले-खिले रहना, प्रफुल्लित रहना बहुत बड़ी बन्दगी है। सदा प्रफुल्लित रहें, फूल की तरह खिले हुए; ताकि दूसरे लोग भी देख कर खिल उठें।

- सब तरह से सद्गुरु के आश्रित हो जाना चाहिए। जितना हो सके प्रयत्न और पुरुषार्थ करें, लेकिन चिन्ता न करें, भरोसा रखें और निश्चिंत रहें।

- हम परमात्मा के ही हिस्से (अंश) हैं। शरीर के किसी अंग के खराब होने पर जैसे सारे शरीर को पीड़ा होती है, वैसे ही हमारी उदासी से विश्वात्मा को तकलीफ होती है; इसलिये सदा प्रसन्नचित रहना चाहिये। राज़ी-ब-रज़ा रहना चाहिये। वह हमारा हित बेहतर जानता है। उसकी मर्जी पर निर्भर हो जाना चाहिये। इसी में हमारा भला है। वह सब तरह हमारी देखभाल करता है।

- यह दुनिया बहुत बड़ी पाठशाला है। इसी के बीच रहते हुए, प्रभु को पहचानना है। हर चीज़ को देख कर उसको याद करना चाहिये। ये सब उसकी नियामतें (देन) हैं। सब में वही समाया है। उसकी कुदरत को देख-देखकर उसकी याद करना भी ध्यान भजन (साधना) ही है।

- खुद को उनके हवाले कर देने की ज़रूरत है। मन को भी उन्हीं के सुपुर्द कर दीजिये। सारे साधन-भजन केवल इस मन को सुलझाने के लिये ही हैं। जीते जी यह काम हो जाना चाहिये।

- अपने ऐब नज़र आते रहें, उसकी याद बनी रहे और दया की प्रार्थना करते रहें, यही पर्याप्त है।

- संतोष सबसे बड़ा धन है। अपने से ऊपर देखते हैं तो असंतोष होता है, लेकिन अपने से नीचे की ओर देखियेगा तो संतोष मिलता है। इस मन की फरमाइशों की कोई सीमा नहीं है। जिस चीज़ के बिना काम ना चले वही ज़रूरी है। अध्यात्म के मार्ग पर बढ़ने के लिए ज़रूरतों को कम रखना ज़रूरी है।

- हर वक्त उसका शुक्रिया अदा करते रहना चाहिये। यह सबसे बड़ी बन्दगी है। हर बारीक बात में उसकी कृपा का एहसास होता है। हर समय उसके शुक्र-गुजार रहना अच्छा है। किसी भी तरह उसकी याद, उसका तसव्वुर हो जाता है। इससे बड़ा फायदा होता है। सारे व्यवहार, सारे काम उसके सहारे किये जाएँ, उसी के लिये किये जाँए, तो सही होते हैं।

- उससे सम्बन्ध हो जाने पर सब कुछ अपने आप होने लगता है। सोहबत (संग) का बहुत असर होता है। जैसों के साथ बैठते-उठते हैं वैसा ही प्रभाव पड़ने लगता है। जिनकी आत्मा शुद्ध होती है उन पर संगत का असर जल्दी पड़ता है। अतः कुसंग से बचना चाहिये।

- कुसंग से तत्काल पतन होता है। सुसंगत से धीरे-धीरे फसल तैयार होती है, लेकिन आग की चिंगारी उसे कुछ ही देर में जला डालती है। इसीलिये बुरी-संगत से दूर रहना चाहिए।

- प्रभु अकारण कृपा करते हैं। पता नहीं कब कौनसी बात उन्हें भा जाती है। जैसे माँ को बच्चे की कोई हरकत भा जाती है और वह उसे कंठ से लगा लेती है। बस शरणागत बने रहें। सब कुछ समय पर होता है।

- अपने इष्ट अथवा गुरु-भगवान पर दृढ़ विश्वास होना चाहिये, फिर सब काम अपने आप होने लगते हैं। सद्गुरु का आसरा लेकर सभी काम यथोचित करते जाना चाहिये। यह प्रेम और समर्पण का रास्ता है। मन- मुख से गुरु- मुख हो जाना चाहिये।

- यदि हम उसकी ओर एक कदम बढातें हैं तो वह सौ कदम पेशवाई करता है। वह परमपिता है, केवल भाव का भूखा है।

- इस मन की तरफ ध्यान देना चाहिये, इसमें प्रेम का ज़ज्बा पैदा करना चाहिये, तब आत्मिक चढ़ाई आसान हो जाती है। जब कोई सच्चे दिल से याद करता है, तो उधर भी याद शुरु हो जाती है। मिलने का सा आनन्द आता है।

- सुबह-शाम करीब 15 मिनिट ध्यान में बैठना चाहिये। ऐसा ख़याल करें कि सामने, अपने इष्टदेव से प्रकाश की धार हमारे दिल पर पड़ रही है। यहाँ से यह प्रकाश हमारे रोम-रोम में भर रहा है। सारा शरीर प्रकाशित हो रहा है और हम प्रकाश में डूब रहे हैं, अन्धकार विलीन हो रहा है। कुछ दिन निश्चित स्थान व समय पर अभ्यास करें, ताजगी मिलने लगे और सरुर-सा आने लगे तो समझियेगा कि लाभ हो रहा है। आपा भूल, गुरु-रूप हो जाना चाहिये। प्रेम में तद्रूपता आ जाती है, दुई मिट जाती है।

- सुबह जल्दी उठ कर ध्यान-भजन करने से मन निर्मल होता है, ताकत आती है, और स्वास्थ्य ठीक रहता है।

- सवेरे जल्दी उठकर वायु सेवन करना स्वास्थ्य के लिये गुणकारी है। यह कई रोगों की दवा है।

- उसकी याद बनाये रखना सबसे बड़ी पूजा है। एक प्रेम में सब कुछ आ जाता है। यदि मुकम्मिल प्रेम हो तो सारी मंजिलें अपने आप तय हो जाती हैं।

- सद्गुरु पग-पग पर सहायता करते हैं, सब जगह संभाल रखते हैं, जिसका हमें पता भी नहीं होता। उनकी अपार लीला है। वे न जाने क्या-क्या करते हैं। कैसे उनकी महानता का जिक्र करें। अपना आपा भूल कर गुरुरूप हो जाना चाहिये। चलते-फिरते उन्हीं के ध्यान में रहना चाहिए। सद्गुरु के तसव्वुर (ख़याल) से लाभ ही लाभ है।

- कभी किन्हीं संत महात्मा के पास जाएँ तो अपने सद्गुरु

भगवान को याद रखें। इससे सुरक्षा होती है।

- एक संकेत में ही सब काम बन जाता है। अपनी खुदी मिटा कर गुरु-रूप में फना हो जाने से सब काम हो जाता है।

- प्रेम का असर अनोखा है। यह सातों आसमानों को चीरकर पहुँच जाता है। सच्चा प्रेम ईश्वरीय गुण है।

- यह दुनिया मुर्दा पसन्द है, जिन्दा पसन्द नहीं। जब कोई गुज़र जाता है, तब उसे याद किया जाता है।

- साधक को सारग्राही होना चाहिये। सच्चा जिज्ञासु शब्दों की अटक में नहीं पड़ता। उसका सारा ध्यान अपने मन की सफाई में रहता है। बस उसकी याद बनी रहे। याद में सब कुछ मिल जाता है। याद है तो आबाद है।

- विश्वास सबसे बड़ी चीज़ है। यदि दृढ़ विश्वास रखें और सही नियत से अपना कर्त्तव्य पालन करते जाएँ तो ईश्वर खुद हमारे योग-क्षेम का वहन करते हैं।

- भोजन मेहनत की कमाई का ही होना चाहिये। इससे जल्दी तरक्की होती है। शुद्ध अन्न का असर शरीर व मन के साथ आत्मा पर भी पड़ता है।

- अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के विचार आने पर उसको धन्यवाद देना चाहिये, क्योंकि पता नहीं किस मसहलत से क्या होता है। पुराने संस्कार बुरे विचार आने के साथ कटते हैं। फिर यदि अच्छे ही अच्छे विचार आवें तो गरूर हो जावे जिसमें गिरने का अन्देशा रहता है। इसलिए हर हाल में उसकी याद कायम रहनी चाहिए।

- गृहस्थ ही पंच तप या पाँच धूनी तपना है। दुनियादारी को यथायोग्य निभाना बहुत बड़ी तपस्या है।

- परहेज़गार होकर भी उसकी दया चाहे, यह बड़ी बात है। हर परहेज़गार उसी की बक्सिश का मुन्तज़िर है।

- आदमी सारी तकलीफें उठाकर भी जीना चाहता है। एक-एक साँस कितनी कीमती होती है फिर भी उसका धन्यवाद नहीं करता, उसे भूला रहता है।

- सारे व्यवहार और काम उसके सहारे होकर किये जायें तो सही होते हैं।

- हर समय उसकी अनन्त दया बरसती है। कौनसा संस्कार किस प्रकार कब कट जाता है, पता भी नहीं चलता। उस पर भरोसा रखें, चिन्ता न करें। उसका आसरा लेकर निश्चिन्त रहना चाहिये और करने योग्य सभी काम करते जाना चाहिये।

- स्त्री, बच्चों आदि सबको उसी की देन समझें और इसी नाते उनके प्रति अपना कर्त्तव्य पालन करें।

- जब वह दुश्मनों तक का ख़्याल रखता है तो दोस्तों को कैसे महरुम रखेगा।

- कभी सही काम करने का गरूर नहीं होना चाहिये। हर समय अपने आपको छोटा मानना और उसका धन्यवाद करते रहना चाहिये। सच्चाई के साथ व्यवहार करना तो इन्सान का साधारण धर्म है, जिसका इनाम तो मन की प्रसन्नता के रूप में तुरन्त मिल जाता है।

- जैसे का विचार करोगे, वैसे ही भाव मन में आ जावेंगे। सज्जन का ख़याल करने पर मन में अच्छे विचार आते हैं। किसी दुष्ट का ख़याल करने पर उसे मारने काटने का विचार होगा। इसीलिए ईश्वर चिन्तन करते रहना चाहिये, ताकि उसके गुण हममें आ जावें।

- उसकी प्रकाश की धार स्वयं अपने आप उतरती रहती है। माँ कितनी भी गहरी नींद में हो, बच्चे द्वारा आँचल मुँह में लेकर चूसते ही दूध आ जाता है, जिसकी माँ को खबर तक नहीं होती। इसी प्रकार उस परमेश्वर की ओर तवज्जोह होते ही कृपा-धार स्वयंमेव बरसने लगती है।

- इत्र लगाकर जैसे कोई व्यक्ति चला जाता है तो सब जगह खुशबू अपने आप फैल जाती है। इसी प्रकार उसके ख़याल में रहने से सब पर स्वयं प्रभाव पड़ता है।

- बहुरूपिया जिस प्रकार मेहतर और राजा का पार्ट बखूबी अदा करता है, किन्तु अपना असली रूप नहीं भूलता, उसी तरह हमें दुनिया में रहना चाहिये। सारे कार्य व्यवहार यथायोग्य करते हुए मन कमल की तरह निर्मल रहे, फिर दीन और दुनिया में कोई विरोध नहीं रहेगा।

- यह प्रेम और समर्पण का रास्ता है। साधक को मन-मुख से गुरु-मुख हो जाना चाहिये।

- सूफी वह है जो मुहब्बत इलाही में डूबा रहता है।

- यदि ठीक ढंग से याद किया जाये तो उधर भी तार से तार जुड़ जाता है। मिलने का-सा आनन्द आ जाता है। जब कोई याद करता है, तो उधर भी याद शुरू हो जाती है।

- हर समय मन पर निगाह रखनी चाहिये। कोई बुरा ख़याल मन में न आने दो। अपने हृदय की रक्षा करो। पूजा के समय मन को सुला दो, आत्मा को जगाओ।

- भोजन करने से पहले तरह-तरह के विचार आ रहे हों तो पहिले प्रार्थना करो। मन को शान्त करो। फिर वही भोजन सात्त्विक है।

- हर शब्द में वही वह सुनाई देता है। हर ग्रास में वही वह। जब शब्द जाग्रत हो जाता है तो रात-दिन भजन होता रहता है।

- शरीर से त्याग, त्याग नहीं है मन से त्याग, असली त्याग माना जाता है। किसी बात की अति अच्छी नहीं है। गृहस्थ के सब धर्मों का पालन करते हुए भी मनुष्य परमार्थ कमा सकता है।

- हरदम उसकी याद बनी रहनी चाहिये। उसकी कुदरत की

खूबियों को देखकर देख-रेख याद आती रहती है। यह भी एक प्रकार का ध्यान-भजन ही है।

- सेवा बहुत बड़ी चीज़ है। जिस पर उसकी बहुत कृपा होती है, उसी में सेवा-भाव पैदा होता है। बहुत इबादत के बाद सेवा-भाव पैदा होता है। आपने फारसी का एक शेअर सुनाया– **'इबादते बजुज़ खिदमते खल्क नेस्त'**; जिसका भावार्थ है कि संसार की सेवा, प्राणी मात्र की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।

- आपने फरमाया कि ध्यान करते समय यदि कोई विचार आने लगे और हटाये न हटे तो तुरन्त आँखें खोल देनी चाहिये और मन ही मन जाप करना चाहिए।

- मन बड़ा विचित्र है यह ठेठ तक तँग करता है, इसे ईश्वर की ओर लगाए रखना चाहिये। हरदम उसकी याद बनी रहनी चाहिये। शब्द जब सुनाई दे, तो अपनी सुरत उसी में लगाये रखें। हरदम उसी का ध्यान रहे। याद बनी रहने पर सब जगह वह है। इस पर यकीन लाना ज़रूरी है। आपने फरमाया कि दो बार उसकी याद अवश्य करनी चाहिये। 1. भोजन करते समय। 2. सोने से पहले। फिर भोजन भजन हो जाता है। नींद याद में बदल जाती है।

- यदि भगवान हमारे ऐबों को देखने लगे तो कहाँ ठिकाना रहेगा। दूसरों के ऐबों को ढकना चाहिए। सब में वही वह है।

- कईयों ने तो उसे माता-पिता की सेवा से ही पा लिया। कई स्त्रियों ने पति की सेवा से उसे पा लिया।

- सबसे बड़ी पूजा मालिक की याद बनाए रखना है तथा उसकी रज़ा में राज़ी रहना है।

- एक बार फरमाने लगे कि अब तो गुरू भगवान कृपा करें और यह मन खाली हो जाय और यदि कोई चीज़ इसमें आवे भी तो उस की याद आवे।

- एक बार आपने फरमाया कि बहुत बढ़िया बाग होता है, उसमें गुलाब, केवड़ा, मोगरा, चमेली के फूलों की ख़ुशबू आती रहती है, सब महकते रहते हैं। पर जब कोई आदमी आकर वहीं पाख़ाना कर जाता है तो इन फूलों की ख़ुशबू दब जाती है और बदबू आने लगती है। अगर कोई समझदार बागवान आकर उसे दूर फेंक दे तो फिर से महक आने लगती है। यह संसार भी भगवान का बगीचा है। सन्त इसके बागवान हैं जो इसकी सफाई करते रहते हैं।

- चिन्ता नहीं करनी चाहिये। ध्यान भजन इसीलिए तो किया जाता है कि भगवान का नाम लेने से रंज व ख़ुशी मिट जाते हैं। रंज में रंज ज़्यादा नहीं होता और ख़ुशी में ख़ुशी ज़्यादा नहीं होती। यही ख़ास चीज़ है।

- जब मन ज़्यादा इधर-उधर जावे तो जो पेड़, मकान, पहाड़ या वन या कोई भी चीज़ देखकर यह ख़याल करें कि देखो भगवान ने यह कैसी चीज़े बनाई हैं। कैसा रंग है, कितना बड़ा है, किसके आधार पर यह सब ठहरा हुआ है। इसी तरह जो भी सामने हो, उसी की समझ कर उसमें भगवान की मौजूदगी देखें। उसीकी कृपा और उसीका बल समझे। उसीकी देन समझे। कोई चीज़ उससे ख़ाली न समझे।

- जब मनुष्य भगवान का सहारा ले ले तो फिर यह ख़याल न करे कि फलाँ बात होगी या नहीं, फिर तो उसकी मर्ज़ी पर निर्भर हो जाना चाहिये। इसी में अपना भला ही भला है।

- जिस मकान में भजन होता है उस मकान के दोष निकल जाते हैं, और अशुभ भी शुभ हो जाता है।

- खाने-पीने और रहन-सहन की चीज़ों पर ध्यान न देने के कारण भजन में मन कम लगता है।

- ध्यान के लिए कोई समय नियत कर लें। उस समय ध्यान करने के समय से पहले ही एक किस्म का ध्यान लगने लग जाता है।

- जब मनुष्य गुरु की शरण हो जाता है तो अन्तर्मुखी होने लगता है।

- जब फालतू विचार कम होने लगें तो समझना चाहिये कि भजन में तरक्की हो रही है।

- बीती हुई बात का पछतावा नहीं करना चाहिये। जब दिल में बुरे ख़याल आवें तो ईश्वर का या सद्गुरु का ख़याल कर लेना चाहिये, वे हट जावेंगे।

- रामायण भक्ति प्रधान और गीता ज्ञान प्रधान ग्रन्थ है।

- जो अपनी सेवा नहीं कर सकता वह दूसरों की सेवा क्या करेगा।

- उससे कनेक्शन हो जाने के बाद सभी कुछ अपने आप होने लगता है। स्वंय को कर्त्ता न माने।

बन्दगी का लुल्फ और बन्दा नवाजी का मज़ा।
पूछ उस बन्दे से जो बन्दे का बन्दा हो गया।।

- गुरु भगवान कृपा कर निगह में ऐसी शक्ति फ़रमा देते हैं कि जिसकी ओर देखो, उसके विचार और गुण स्वयं में खिँच कर चले आते हैं। यह इसलिए होता है कि अधिक से अधिक गुरु का तसव्वुर कर उनके गुण ग्रहण कर सकें।

- पहिले स्वयं को बनाएँ फिर परिवार को और बाद में पड़ोसियों को, धीरे-धीरे सबको।

- मनुष्य जन्म उसकी बेशकीमती सौगात है। जिस मकसद के लिए जीवन मिला है, उसे याद रख कर इस थोड़े से जीवन में उसे हासिल करना है।

- सद्गुरु से प्रेम हो जाने पर, चलते फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, हर समय ध्यान उधर लगा रहता है, बिजली के तार की तरह मन उनसे जुड़ा रहता है, आसानी से काम हो जाता है।

- एक बार कानपुर वाले चद्दा जी साहिब फ़रमाने लगे कि हमें भ्रम है कि ईश्वर हमसे दूर है। हकीकत में वह हमारे पास से भी पास है, हमारे ही भीतर बिराजा है। सब कुछ वही वह है।

- मौत का कोई भरोसा नहीं, कभी भी लेने आ जाये, इसलिए पलभर के लिए भी गुरु को अपने से और अपने को गुरु से अलग न समझें। हर वक्त उन्हें अपने साथ ही समझें।

- वह जर्रे-जर्रे में मौजूद है। हर वक्त उसकी याद बनी रहे तो उससे सम्बन्ध जुड़ जाता है। मिलने की तलब गहरी हो तो वह अपने पास ही है।

- अपना खालिस प्रेम का रास्ता है, यह आसान रास्ता है जो ध्येय तक ले जाता है। सब कुछ उसी को अर्पित हो, उसी के लिए हो, उसी की खुशी के लिए हो, यह सरल साधन है।

- बाहर से भीतर की ओर आना है, उसी में लय होना है, जिन्दगी का यही असली मकसद है।

- इस विद्या को हासिल करने के लिए, कुछ पल के लिए भी सद्गुरू के रूबरू हो जायें और उनसे सद्दा प्रेम हो जाये, तो फिर दूसरे साधनों की खास ज़रूरत नहीं रहती।

- यह चेतन ही परमात्मा है जो अपने में छिपा बैठा है। सद्दी लगन से ही वह रीझता है, सद्गुरु की कृपा से वह प्रकट होता है।

- मन को बार-बार उसमें लगाते रहें, फिर यह अपने आप उधर लगने लगेगा, इसकी भटकने की आदत छूटती जायेगी। गाड़ी स्टार्ट करने के लिए शुरु में धक्के की ज़रूरत होती है, फिर तो आसानी से अपने आप चलती है।

- दृढ़ विश्वास रखें कि वह समय पर जो आपके हित में होगा, ज़रूर करेगा। आप पर उसकी पूरी निगह है, उसे सब ख़बर है। भरोसा रखें, सारा जिम्मा उसी का है।

- सद्गुरू का स्मरण करते रहने से लाभ ही लाभ है। इससे उनके गुण शिष्य में उत्तर आते हैं। सब तरह सुरक्षा होती है और आसानी से मन अन्तर्मुखी होने लगता है।

- परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं है, मुश्किल काम तो सद्गुरू का मिलना है। सच्ची लगन हो तो अवश्य सद्गुरू मिल जाते हैं। फिर चलते-फिरते, उठते-बैठते, खाते-पीते, हर समय अपना ध्यान उसी ओर लगा रहना चाहिये। सब तरह उनके आश्रित हो जाना चाहिये।

- सद्गुरू से सम्बन्ध हो जाने के बाद सब कुछ अपने आप होने लगता है। पुराने संस्कारों का कचरा साफ़ होता जाता है, हल्के होने लगते हैं, लेकिन संस्कार खत्म होने तक बीच की खट-पट तो होती ही है।

- प्रार्थना करते रहें कि हे प्रभु! आपकी इच्छा पूरी हो, मुझे अपनी इच्छानुसार चलावें, मुझे अपना प्रेम प्रदान करें।

- हमेशा खुश रहना उसकी सबसे बड़ी इबादत है। हँसते रहो, हँसाते रहो, बसते रहो, बसाते रहो।

- सच्चा प्रेमी इज़हार नहीं करता। वह अपने प्रेम को पोशीदा रखता है। भक्त भी अपने प्रेम को गुप्त रखता है। प्रेम में सारी मन्जिलें अपने आप तय हो जाती हैं।

- परम तत्त्व किसी साधन से नहीं मिलता, इसमें गुरु-भगवान की कृपा चाहिये, तभी इसकी अनुभूति होती है। जिसका गुरु से प्रेम हो गया, उस पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं। फिर सभी पर्दे धीरे-धीरे गिरते जाते हैं।

- अपने असली घर की याद रहे जहाँ हमें जाना है। दुनिया मुसाफ़िरखाना है, जहाँ हम कुछ देर के लिए मेहमान हैं, फिर यहाँ से रवाना होना है। एक-एक साँस कीमती है। यह हमारा असली घर नहीं है। **'नसीम जागो, कमर को बाँधो, उठाओ बिस्तर कि रात कम है।'**

- वह कहीं खोया हुआ नहीं है जो उसे ढूँढ़ना हो। उसे अपने से दूर समझना, अलग मानना ही सबसे बड़ा भ्रम है। इसी भ्रम को तोड़ना है। वह पास ही नहीं, खुद अपने में समाया हुआ है। बस हर वक्त उसके शुक्र गुज़ार रहें, उसे मौजूद जानें और उसकी याद बनी रहे। दृढ़ विश्वास से उसके साथ सम्बन्ध कायम हो जाता है।

- एक बार फ़रमाया "गुरु-भगवान फ़रमाते थे कि जो कुछ शास्त्रों में है वह सब सन्तों के हृदय में मौजूद है, लेकिन जो सन्तों के हृदय में है, वह शास्त्रों में ढूँढ़ने से भी नहीं मिलता।"

- माँ छोटे बच्चे की हर तरह देखभाल करती है। बच्चे का माँ से सच्चा प्रेम होता है, उस पर उसका पूरा भरोसा होता है। ऐसे ही यदि उससे मुकम्मिल प्रेम हो जाय तो उसे ज़रूर पाया जा सकता है।

- आपने फ़रमाया कि यदि श्रद्धालु शिष्य या समर्थ गुरु मिल जावें तो भी वह प्रकट हो जाता है। यदि दोनों मिल जावें तो फिर क्या कहना। प्रह्लाद ने खम्भे में से और एकलव्य ने अपने बनाये पुतले में उसे प्रकट कर लिया। भक्ति मार्ग सबसे सरल और शीघ्र मिलाने वाला है। प्रेम में तद्रूपता आ जाती है। स्वयं को गुरुरूप बना डालिये।

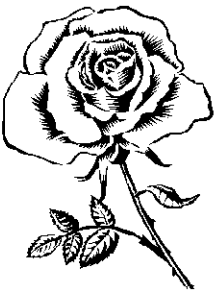

पदावली

(ठाकुर-प्रभु के दरबार में सुनाये गये कुछ पद एवं शेअर'ओ- शायरी)

प्रभु! तुमको बहुत ढूँढ़ा, कुछ पता पाया नहीं।
जब पता तेरा मिला, मेरा पता पाया नहीं।।

बेखुदी छा जाए ऐसी, दिल से मिट जाए खुदी।
उसको पाने का तरीका, खुद के खो जाने में है।।

तेरा साँई तुझमें, ज्यों पत्थर में आग।
जो चाहे दीदार तो, चकमक हो के लाग।।

दिल का हुजरा साफ कर, 'जाना' कि आमद के लिये;
ख़याल गैरों का हटा, उसको बिठाने के लिये।
वो आयें भला क्यों कर, रस्ता ही नहीं दिल में;
अरमानों का मजमा है, और भीड़ है हसरतों की॥

जा कारण बन-बन फिरे, सो बैठा घर माँहि।
वस्तु कहीं, खोजे कहीं, कैसे मिलि हैं ताहि।।

अगर दिल गिरफ्तार है मखमसों में;
तो खिलवत भी बाजार से कम नहीं है।
मगर तेरे दिल को जो यकसुई हासिल;
तो अन्जुमन में भी तू खिलवत नशीं है।।

दिल भी तू, चाह भी तू, अस्ले मुद्दआ भी तू।
तू ही बता कोई माँगे अगर तो क्या तुझसे।।

करम भोग भोग्यां कटै, ग्यानी मूरख दोय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय।।

ताला तुम डाल देते हो खुदा के बहरे रहमत में।
गुनाहों की नदामत से जो दो आंसू निकलते हैं।।

दिल के आइने में है तसवीरे यार।
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।।

बन्दगी का लुत्फ़ औ, बन्दा नवाजी का मज़ा।
पूछ उस बन्दे से, जो बन्दे का बन्दा हो गया।।

जो जाकी शरणा गहे, ताको ताकी लाज।
उलटे जल मछली चढ़ै, बह्यो जात गजराज।।

जिस जगह सदियों के सज़दे भी रहे नाकामयाब।
उस जगह इक़ आह तकमीलए इबादत हो गई।।

मनहि से बन्धन, मनहि से मुक्ति, मनहि का सकल पसारा रे।
जो यह मन जीवत बस नाहीं, बहुत देवे भव त्रासा रे।।

रे नर जीवत ही कर आशा;
जीवत समझे जीवत बूझे, जीवत होय भ्रम नाशा;
जो यह मन जीवत वश नाहीं बहुत देवे भव त्रासा;
मुए मुक्ति, गुरु कहें स्वारथी, झूँठा दे विश्वासा।

जहाँ प्रेम तहाँ नियम नहीं, तहाँ न विधि व्यौहार।
प्रेम मगन जब मन भया, कौन गिने तिथि बार।।

तीर पे तीर खाये जा, यार से लौ लगाये जा।
उफ न कर लबों को सी, इश्क है दिल्लगी नहीं।।

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
शीश उतारे भुई धरे, तब पैठे घर माँहि।।

ये दर्दे दिल ही है, जिससे कि उसको पाते हैं।
खुदा भला करे उनका, जो दिल दुखाते हैं।।

जिन्हें है इश्क सादिक, वे कहाँ फरियाद करते हैं।
लबों पर मोहरे खामोशी, दिलों में याद करते हैं।।

सकूने दिल मयस्सर हो, तलब में गैर मुमकिन है।
सकूँ चाहे अगर इन्सा तो अपनी दुनिया मुक्तसर कर ले।।

हर हाल में खुश रहना, यह है खुदा परस्ती;
मुझको तो ऐ मुहक्विस बूटी मिली है सस्ती।
हंगामें तंगदस्ती, दर एश कोस मस्ती;
ई कीमियाए हस्ती, कारूँ कुनद गदारा।।

सुख के माथे सिल पड़े, हरि हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुःख की , जो पल पल राम रटाय।।

जाहिद खुदा की याद को न भूल चीनहार।
अपने तई भुला दे, गर तू भुला सके।।

कबिरा मन तो एक है, भावे तहाँ लगाव।
भावे गुरु की भक्ति कर, भावे विषय गवांय।।

किसने है तजल्ली रुखे रोशन की दिखाई।
खुद रह गया मुझ से खुदी मेरी मिटा दी।।

सामने तेरे भी इक दिन, दौरे महबा आयेगा।
तू अभी समझा नहीं साकी का इमां, सब्र कर।।

दर्द से खूँगर हुआ तो मिट जाता है दर्द।
मुश्किलें इतनी पड़ी कि सबहि आसां हो गई।।

जफ़र क्या पूछते हो, राह उससे मिलने की।
इरादा हो अगर तेरा, तो हर जानिब से रस्ता है।।

जिसको उसके मकां का पता मिल गया।
वह खुद ही बे-निशां, बे-निशां बे-निशां हो गया।।

मकतबे इश्क का देखा यह निराला दस्तूर।
उनको छुट्टी न मिली, जिनको सबक याद रहा।।

सब कुछ खुदा से माँग लिया, तुझको मांग कर।
उठते नहीं हैं हाथ मेरे इस दुआ के बाद।।

राहे सलूके इश्क में रियाज़त नहीं ज़रुर।
सौ सौ मुकाम होते हैं, तय एक नज़र में।।

गोधन, गजधन, बाजीधन और रतनधन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।।

जब से हटी है ख्वाहिश, फूलों को सूँघने की।
सारे जहाँ के गुलशन मेरे ही हो गये सब।।

खुद तो तालिब रहम का है, खुद ही जालिम और पर।
किस तरह मंजूर होगी, कुछ तो दिल में गौर कर।।

मुझको आती है हँसी इस हज़रते इन्सान पर।
कारेबद तो खुद करे लानत पड़े शैतान पर।।

मन मैला तन ऊजरा, बगुला का सा भेस।
याते तो कागा भला, जो बाहर भीतर एक।।

दिल दे परवरदिगार तो, इस तरह का दे।
कि गम की घड़ी भी, खुशी से गुज़ार दे।।

या इलाही मैं तो मुज़रिम हूँ मगर तू बख़्श दे।
क्या खता कोई चीज़ है तेरी अता के सामने।।

तू नवाजने पे आये तो नवाज़ ले जमाना।
तू करीम ही तो ठहरा तेरे करम का क्या ठिकाना।।

तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा पिण्ड और प्राण।
सब कुछ तेरा तू है मेरा, यह दादू का ज्ञान।।

करे कराए साइंया सिर औरों के देय ।
दादू शोभा दास की, अपनो नाम न लेय।।

कबीर चेरा सन्त का, दासन का पर दास।
कबीर ऐसे हो रहा, ज्यों पांव तले की कास।।

हँस हँस पीव न पाइया, जिन पाया तिन रोय।
हँसते-हँसते पिव मिले, तो कौन दुहागिन होय।।

अपनों से गैर अच्छे हैं जो बफा से काम लेते हैं।
गुलों से खार बेहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं।।

सुखदेवे सोई सगो, हाँड न सगो होई।
माँ रोवे महली (नारी) जरे, बड़ो अचम्भो मोय।।

दो हि शर्तें हैं बफ़ा की, आज़मा के देख लो।
खुद किसी के हो रहो, या अपना कर के देख लो।।

जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, या में दो न समाहिं।।

खामोश अय दिल भरी महफिल में चिल्लाना नहीं अच्छा।
अदब पहिला करीना है, मुहब्बत के करीनों में।।

कुतब महज़ सूखी हुई हड्डियाँ है;
इन्हें कौन चबाये ये सख्त जां हैं।
बड़ी मुश्किल से मिलती है जिन्दा किताबें;
नसीबों से मिलती हैं खालिस शराबें।।

तमन्ना दर्दे दिल की हो तो कर खिदमत फकीरों की।
नहीं मिलते ये गौहर बादशाहों के खदीनों में।।

साईं से सब होत है, वन्दे से कछु नाहिं।
राई से पर्वत करे, पर्वत राई समाहिं।।

जाको राखे साईंया, मार सके नाहिं कोय।
बाल न बाँका कर सके, जो जग बैरी होय।।

तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझमें रही न हूँ।
बलिहारी तेरे नाम की जित देखूँ उत तूँ।।

ये चमन यूँ ही रहेगा, बागवाँ और शोरगुल।
अपनी-अपनी बोलियाँ सब बोलकर उड़ जायँगें।।

तसव्वुर में तेरे रहना, इबादत इसको कहते हैं;
तेरे कूचे में मर मिटना, शहादत इसको कहते हैं।
तुझी को देखना, तुझी को सुनना, तुझी में गुम होना;
हकीकत, मार्फत, अहलेतरीकत इसको कहते हैं।।

सिर बरहना नेस्तं दारं कुलाहे चार तर्क।
तर्के दुनिया, तर्के उकबा तर्के मौला, तर्के तर्क।।

उजाले अपनी यादों के हमारे पास रहने दो।
न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाय।।

क्यों भटकता फिर रहा, तू ए तलाशे यार में।
रास्ता शाह रग में है, दिलवर को पाने के लिए।।

ए मालिक तेरी रज़ा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरज़ू रहे।।

आगह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का, पल की ख़बर नहीं।।

मत सता ज़ालिम किसी को, मत किसी की आह ले।
दिल के दुःख जाने से नादां, अर्श भी हिल जाय है।।

कभी उन मद्भरी आँखों से पिया था इक जाम।
आज तक होश नहीं, होश नहीं, होश नहीं।।

बन, रण व्याधि, विपत्ति में, वृथा सोच क्यों होय।
जो रक्षक जननी जठर, सो प्रभु गये न सोय।।

रज़्जब केहि लग रोइये, हँसिये कौन उपाय।
गये सो आवन के नहीं, रहे सो जावन हार।।

कदम सूये मरकज़, नज़र अहले दुनिया।
किधर जा रहे हो, किधर देखते हो।।

चलना है रहना नहीं, चलना बिसवा बीस।
सजहो तनिक सुहाग पर, कहाँ गुँथावे शीश।।

दिल के आईने में है तस्वीरे यार।
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।।

यह बाजी मुहब्बत की बाजी है नादां;
इसे जीतना है तो हारे चला जा।
तमन्नाएँ आगोश में जाना अगर है;
'गरीब' अपनी हस्ती मिटाये चला जा।।

अजब तेरा कानून देखा खुदाया।
जहाँ सर झुकाया, वहीं तुझको पाया।।

मरते वहीं हैं मौत से डरते हैं जो 'नसीम'।
जीना जो हो तो मौत से याराना चाहिये।।

मुद्दत से 'अमीर' उसके, मिलने की तमन्ना थी।
आज उसने बुलाया है, लेने को कज़ा आई।।

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि विचार।
कथनी छांडि करनी करे, तब पावे कुछ सार।।

वस्तु कहीं ढूँढ़े कहीं, केहि विधि आवे हाथ;
कहै कबीर तब पाइये, जब भेदी लीजे साथ।
भेदी लीना साथ कर दीनी वस्तु लखाय;
कोटि जन्म का पन्थ था, पल में पहुँचे जाय।।

नारायण हरिभक्त की, प्रथम यही पहिचान।
आप अमानी होई रहें, देत और को मान।।

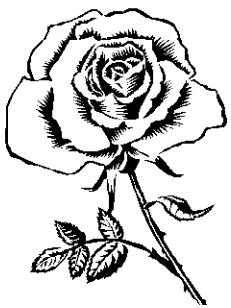

भजनाञ्जली

संगीत से आपको काफ़ी प्रेम था। आप विशेष रूप से भक्ति प्रधान भजन ही सुनते थे। सामूहिक पूजा के अवसरों पर आप ऐसे भजन प्रस्तुत कराते जिनसे ध्यान का वातावरण बन जाता। उस समय प्रेम की धारा का प्रवाह होता रहता। सब बे-सुध होकर इसमें डूब जाते थे। प्रेमी भक्तों द्वारा आपके समक्ष प्रेषित कुछ भजन प्रस्तुत हैं:-

परम प्रभु अपने ही उर पायो।

जनम जनम की मिटी कल्पना, सतगुरु भेद बतायो।।
जैसे कुँवरि कंठ-मणि-भूषण, जान्यो कहूँ गवाँयो।
काहु सखी ने आन बतायो, मन को भरम नसायो।।
ज्यों तिरिया सपने सुत खोयो, जानिके जिय अकुलायो।
जाग परी पलंग पर पायो, ना कहुँ गयो न आयो ।।
जैसे मृगा-नाभि-कस्तूरी, खोजत बन-बन धायो।
उलटि सुगन्ध नाभि की लीन्ही, स्थिर हो के सकुचायो।।
कहे कबीर भई है सो गति, ज्यों गूंगे गुड़ खायो।
ताको स्वाद कहो कहुँ कैसे, मन ही मन मुसकायो॥

❖❖❖

सतगुर मिले मेरे सब दुःख बिसरे, अन्तर के पट खुल गयेजी।
ज्ञान की आग जली घट भीतर, कोटि करम सब जल गयेजी॥
अड़सठ तीरथ या घट भीतर, आपस में रल मिल गयेजी।
पांच चोर लूटे थे रात दिन, आपसे आप ही टल गयेजी॥
गगन मंडल में बिरखा हो रही, अमी के कुण्ड उजल गयेजी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, नूर में नूर जों मिल गयेजी॥

❖❖❖

सन्तो सो सतगुरु मोहि भावे, जो आवागमन मिटावै
डोलत डिगे न बोलत बिसरे, अस उपदेश दृढ़ावै।
बिन श्रम हठ क्रिया से न्यारी, सहज समाधि लगावै॥
द्वार न रौंधे पवन न रोकै, नहिं अनहद उरझावै।
यह मन जहाँ जाय तहँ निर्भय, समता से ठहरावै॥
कर्म करे सब रहे अकर्मी, ऐसी युक्ति बतावै।
सदा आनन्द फन्द से न्यारा, भोग में योग सिखावै॥
तज धरती आकाश अधर में, प्रेम मढ़ैया छावै।
ज्ञान शिखर की शून्य शिला पर, आसन अचल जमावै।।
बाहर भीतर एकहि देखै, दूजा भाव मिटावै।
कहै कबीर सोई सतगुरु पूरा, घट बिच अलख लखावै।।

❖❖❖

दीनन दुःख हरन देव, संतन हितकारी
अजामील गीध व्याध, इनमें कहो कौन साध।
पंछी हूं पद पढ़ात, गनिका सी तारी॥
ध्रुव के सिर छत्र देत, प्रहलाद को उबार लेत।
भक्त हेतु बांध्यो सेतु, लंकापुरी जारी ॥
तन्दुल देत रीझ जात, साग पात सों अघात।
गिनत नाहिं झूठे फल, खाटे मीठे खारी॥
गज को जब ग्राह ग्रस्यो, दुःशासन चीर खस्यो।
सभा बीच कृष्ण-कृष्ण, द्रोपदी पुकारी॥
इतने पै हरि आय गये, बसनन आरुढ़ भये।
सूरदास द्वारे ठाढ़ो, आंधरो भिखारी॥

साधो भाई! हरि गुरु अन्तर नाहीं
हरि ही गुरु हैं, गुरु हरि कहिये, हरि मांही गुरु समाई।
हरि ही गुरु होय अवतरे हैं, जीव जगावन आई।।
हरि गुरु में जो अन्तर माने, पद केवल नही पाई।
चेतन देव सदा शुद्ध कहिये, छिन्न - भिन्न कछु नाहीं॥
जो जाने सो जाने यह गति, निज निश्चय मन मांहि।
आपो खोय आप में बैठे, भ्रम ग्रन्थि नहीं कोई ॥
देवनाथ गुरु मिले दया कर, जद यह बूँटी पाई।
मानसिंह सपने में न दूजा, एक रूप दरशाई॥

मो को कहाँ ढूँढ़े बन्दे, मैं तो तेरे पास में
ना तीरथ में ना मूरत में, ना काशी कैलाश में।
ना मन्दिर में ना मस्जिद में, ना एकान्त निवास में॥
ना मैं जप में ना मैं तप में, नहीं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रिया करम में रहता, नहीं योग सन्यास में॥
नहीं प्राण में नहीं पिंड में, ना ब्रह्माण्ड आकाश में।
ना मैं भुकुटि भँवर गुफा में, हर श्वासन की सांस में॥
खोजी होय तुरत मिल जाऊँ, इक ही पल की तलाश में।
कहे कबीर सुनो भाई सन्तो, मैं तो हूँ विश्वास में॥

❖❖❖

मैं तो वांही सन्तां को दास, जिन्होंने मन जीत लिया
आपा मेट जगत में बैठ्या, नहीं किसी से काम।
उनमें तो कछु अन्तर नाहीं , सन्त कहो जी चाहे राम॥
मन जीता तन वश किया, भई भरमना दूर।
बाहर तो कछु दरसे नाहीं, भीतर बरसे जाँ रे नूर॥
प्याला पीया प्रेम का, छोड्या जग का मोह।
म्हानै सतगुरु ऐसा मिल्या, सहज ही मुक्ति होय॥
नरसीला रा समरथ स्वामी, दिया अमीरस पाय।
एक बूँद सागर में मिलगी स्वामी, काँई करैलो जमराय॥

❖❖❖

साधो! सहज समाधि भली।
गुरु परताप जा दिन ते लागी, त्यों त्यों अधिक चली॥
जहँ जहँ जाऊँ सोई परिकरमा, जो जो करूँ सो सेवा।
जब सोऊँ तब करूँ दंडवत, पूजूँ और न देवा॥
कहूँ सो नाम, सुनूँ सो सुमिरन, खाऊँ पिऊँ सो पूजा।
गृह उद्यान एक सम लेखों, भाव न राखों दूजा॥
आँख न मूँदूँ, कान न रौधूँ, तनिक कष्ट नहीं धारूँ।
खुले नयन पहचानूँ सद्गुरु, सुन्दर रूप निहारूँ॥
सबद निरन्जन से मन लागा, मलिन वासना त्यागी।
ऊठत बैठत कबहुँ न छूटे, ऐसी तारी लागी।।
कहत कबीर यह उनमनि रहनी, सो परगट कर गाई।
सुख-दुःख से है परे परमपद, तामें रहा समाई॥

❖❖❖

तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत प्रभु अन्तर्यामी, करनी कछु न करी।।
अवगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंच की पोट बाँध के, अपने शीश धरी।।
दारा सुत धन मोह लिये हैं, सुध बुध सब बिसरी।
सूर पतित को बेगि उबारो, अब मोरी नाव भरी॥

❖❖❖

मोहन बसि गयो मेरे मन में।
लोक लाज कुल- कानि छूट गई, याकी नेह लगन में॥
जित देखों तितही वह दीखै, घर-बाहर आँगन में।
अंग-अंग प्रति रोम-रोम में, छाई रह्यों तन-मन में।।
कुंडल-झलक कपोलन सोहे, बाजूबन्द भुजन में।
कंकन कलित ललित बन माला, नूपुर धुनि चरनन में।।
चपल नैन भृकुटी बर बाँकी, ठाड़ो सघन लतन में।
'नारायण' बिन मोल बिके हौं, याकी नेक हँसन में॥

❖❖❖

हमारे गुरु हैं पूरण दातार।
अभय दान दीनन को दीन्हे, कीन्हे भव-जल पार।।
जनम-जनम के बन्धन काटे, यम के फन्द निवार।
रंक हूँ ते सो राजा कीन्हे, हरि-धन दियो अपार।।
देवैं ज्ञान भक्ति पुनि देवैं, योग बतावन हार।
तन-मन-वचन सकल सुखदाई, हिरदे बुधि ऊँजियार।।
सब दुःख गंजन पातक भंजन, रंजन ध्यान बिचार।
सज्जन-दुर्जन जो चलि आवैं, एकहि दृष्टि निहार।।
आनन्द-रूप स्वरूप भई है, लिप्त नहीं संसार।
चरणदास गुरु 'सहजो' केरे, नमो-नमो बारम्बार॥

❖❖❖

पायोजी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचे नहीं खूटे, याकों चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो॥
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो॥

❖❖❖

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोबत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है।।
टुक नींद से अखियाँ खोल जरा, और अपने रब से ध्यान लगा।
यह प्रीत करन की रीत नहीं, रब जागत है तू सोवत है।।
जो कल करना है अज करले, जो अज करना सो अब कर ले ।
जब चिड़िंयों ने चुग खेत लिया, फिर पछताए क्या होवत है।।
नादान भुगत करनी अपनी, ऐ पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है।।

❖❖❖

कोई जानेगा जानन हारा, साधो हरि बिन जग अँधियारा।।
या घट भीतर सोना-चाँदी, या ही में लगा बजारा।
या घट भीतर हीरा-मोती, या ही में परखन हारा।।
या घट भीतर काशी मथुरा, या ही में गढ़ गिरनारा।
या घट भीतर राम बिराजे, या ही में ठाकुरद्वारा।।
या घट भीतर तीन लोक हैं, या ही में सिरजन हारा।
कहे कबीर सुनो हो सन्तों, या ही में गुरु हमारा।।

सुने री मैंने निरबल के बल राम।
पिछली साख भरूँ सन्तन की, अड़े सँवारे काम।।
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो, नेक सरयो नहिं काम।
निरबल ह्वै बल-राम पुकारयो, आये आधे नाम।।
द्रुपद सुता निरबल भइ ता दिन, तजि आये निज धाम।
दुस्सासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये श्याम।।
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल, चौथो है बल-दाम।
सूर किसोर-कृपा तें सब बल, हारे को हरिनाम।।

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो; चाहो तो पार करो।।
एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो।
पारस गुण अवगुण नहीं चितवत, कंचन करत खरो।।
एक नदिया एक नाल कहावत, मैलो नीर भरो।
जब मिलके दोउ एक वरण भये, सुरसरि नाम परो।।
एक जीव एक ब्रह्म कहावत, 'सूर' श्याम झगरो।
अबकि बेर मोहे पार उतारो, नहीं प्रण जात टरो।।

मुहब्बत की मंजिल में ओ जाने वाले।
मुहब्बत की मंजिल के काबिल तो होजा।।
खुद आ जाएगी तेरे कदमों में मंजिल।
मगर पहले गुमकर्दा[1] मंजिल तो होजा।।
नहीं लब-कुशाई[2] की तुझको जरूरत।
हो चेहरे से ज़ाहिर तेरे दिल की हालत।।
तुझे भीख देगी खुद उनकी मुहब्बत।
कभी उनके दर का तू सायल[3] तो होजा ।।
अभी है कहाँ बहर-ए[4] उलफ़त का साहिल[5]।
अभी तो अंधेरे में है दूर मंजिल।।
नज़ार आयेगें जल्वा-ए-हुस्न-ए-जानाँ[6]।
मगर उनकी महफ़िल के काबिल तो होजा।।
तू बेकार बातों में उलझा हुआ है।
मिले क्या निशाँ उसका भटका हुआ है।।
जो रास्ता है मिलने का भूला हुआ है।
किसी की मुहब्बत का कायल[7] तो हो जा।।

---

1. लक्ष्य में स्वयं को भुला देना 2. मुँह खोलना 3. सवाल करने वाला प्रार्थी
4. प्रेम सिन्धु 5. किनारा 6. प्रियतम के सौन्दर्य के दृश्य
7. अनुयायी, मानने वाला

दिल का हुजरा[1] साफ कर जानाँ[2] के आने के लिये।
ख़याल गैरों का हटा उसको बिठाने के लिये।।

चश्मे दिल[3] से देख यहां जो जो तमाशे हो रहे।
दिल सितां[4] क्या-क्या है तेरे दिल सताने के लिये।।

एक दिल लाखों तमन्ना उस पै और ज्यादा हविस।
फिर ठिकाना है कहां उसको टिकाने के लिये।।

नकली मंदिर मसजिदों में जायें सद अफसोस[5] है।
कुदरती मसकन[6] का साकिन गम उठाने के लिये।।

कुदरती काबे की तू महराब में सुन गौर से।
आ रही धुर से सदा तेरे बुलाने के लिये।।

क्यों भटकता फिर रहा तू है तलाशे यार में।
रास्ता शहरग[7] में है दिलबर पै जाने के लिये।।

मुर्शिदे कामिल से मिल सिदको-सबूरी[8] से तकी[9]।
जो तुझे देगा फ़हम[10] शहरग के जाने के लिये।।

---

1. हृदय मन्दिर 2. प्रियतम 3. दिल की आंख 4. दिल में बैठे हुए 5. बहुत दुःख 6. प्राकृतिक गृह, हृदय मन्दिर, काबा 7. सुषम्ना नाड़ी 8. सच्चाई और धैर्य पूर्वक 9. डरने वाला खुदा से 10. समझ, विवेक।

मैं तुझे पाने की हरदम, जुस्तजू करता रहूँ।
सबसे तेरे प्यार की मैं, गुफ़्तगू करता रहूँ॥

दिल में ही करता रहूँ, तेरी नमाजे इश्क मैं।
दिल में सिजदा आँसुओं से, मैं वजू करता रहूँ।।

राजे हक की बरकतें, बक्शी हैं जो तूने मुझे।
रात दिन उनकी नुमाइश, चारसू[1] करता रहूँ॥

दिल की यह चाहत है, तू दिल में रहे इसके सिवा।
आरजू कोई न हो, यह आरजू करता रहूँ॥

मैं बनूँ 'तू' और तू रहे, मुझ में समाया इस तरह।
भूल जाऊँ खुद को मैं, और तू ही तू करता रहूँ॥

रात दिन ऐसे रहूँ मैं, तुझसे महवे[2] गुफ़्तगू।
हर नफ़स[3] में तुझको ही मैं, रूबरु करता रहूँ॥

---

1. चारों ओर, हर तरफ 2. तन्मयता, तल्लीनता 3. श्वास, क्षण, पल।

सतगुरु सतगुरु सतगुरु , गुरु भजमन गुरु दाता रे।
गुरु भजमन गुरु दाता रे।।
जग अंधियारा नैन न सूझे, जीव भटक भरमाता रे।
ज्ञान ज्योति प्रकाश दिखाकर, सतगुरु राह दिखाता रे।।
गुरु भजमन .....
पोथी पढ़-पढ़ जग बौराना, हाथ कछु नहीं आता रे।
ग्रन्थन से मन ग्रन्थि न खूटे, सतगुरु तत्त्व लखाता रे।।
गुरु भजमन .....
गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ पियारा, घड़-घड़ खोट मिटाता रे।
अन्तर हाथ सहारा देकर, बाहर चोट लगाता रे ।।
गुरु भजमन .....
पारस लोहा कंचन करता, पारस नहीं बनाता रे।
सतगुरु मेहर दृष्टि जब डाले, शिष्य गुरु सम बन जाता रे।।
गुरु भजमन .....
सतगुरु सतगुरु सतगुरु गुरु भजमन गुरु दाता रे।
गुरु भजमन गुरु दाता रे।।

❖❖❖

'श्रुति् की टेर' पुस्तक के कुछ पद

(भाई श्री रवीन्द्रसिंहजी चौहान सुनाते थे)

बहुकाल तक सोया किया, अब मोह निद्रा त्याग रे।
सब कामनाएँ त्याग कर, ईश्वर भजन में लाग रे।।
संसार जलती आग है, इस आग से बच भाग रे।
सब का भरोसा छोड़ दे, कर ईश में अनुराग रे।।

सद्गुरु सुहृद मिल जायें, ले तू उन्हीं की तब शरण।
विश्वास उन पर पूर्ण रख, ले पकड़ सद्गुरु के चरण।।
माया नटी से मुक्त सद्गुरु ही, बने तारण-तरण।
सब भाँति उनकी जा शरण, होगा न तेरा फिर मरण।।

सद्गुरु सुहृद करुणा-भुवन के पद कमल कर तू ग्रहण।
दे देह अपना सौंप गुरु को, अर्प दे अन्तःकरण।।
नाता उन्हीं से जोड़ तू, हैं एक वे चिन्ता हरण।
सेवा उन्हीं की कर सदा, केवल उन्हीं को कर नमन।।

कर प्रार्थना गुरुदेव से, स्वामिन अनुग्रह कीजिये।
माया अविद्या दूर कीजे, शांति सम्यक् दीजिये।।
भवसिन्धु में हूँ डूबता, गोते न खाने दीजिये।
है नाव मेरी डूबती, भव पार मुझको कीजिये।।

हे देव! बन्धन में पड़ा हूँ, मुक्त मुझको कीजिये।
निर्भय मुझे कर दीजिये, सुख शान्ति अविचल दीजिये।।
विद्या मुझे प्रभु दीजिये, अज्ञान तम हर लीजिये।
करता विनय हूँ आप, सम्यक ज्ञान मुझको दीजिये।।

मैं आपका हूँ, आपके ही आ पड़ा हूँ अब शरण।
करता नमन हूँ फिर नमन, बहु बार करता हूँ नमन।।
वह मार्ग प्रभु दिखलाइये, जिससे न होवे फिर मरण।
परिपूर्ण हूँ, स्वछन्द हूँ, निश्चित हूँ धारूँ न तन।।

'केवट-प्रेम का प्रसंग'

(भाई श्री रवीन्द्रसिंहजी चौहान सुनाते थे)

कृपासिंधु बोले मुसकाई, सोई करु जेहि तब नाव न जाई।
बेगि आनु जल पाय पखारू, होत बिलंबु उतारहि पारू।।

जासु नाम सुमिरत एक बारा, उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।
सोई कृपालु केवटहि निहोरा, जेहि जगु किय तिहु पगहुते थोरा।।

पद नख निरखि देवसरि हरषी, सुनि प्रभु बचन मोह मति करषी।
केवट राम रजायसु पावा, पानी कठवता भरि लेई आवा।

अति आनंद उमगि अनुरागा, चरण सरोज पखारन लागा।
बरषि सुमन सुर सकल सिराहीं, एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहिं।।

दोहा – पद पखारि जल पान करि, आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहिं पुनि, मुदित गयउ लेई पार।।

दैनिक साधना में ठाकुर-प्रभु द्वारा गाया जाने वाला विभीषण जी की शरणागति का प्रसंग

''अस कह करत दंडवत देखा। तुरत उठे प्रभु हरष विसेषा।
दीन वचन सुन प्रभु मन भावा। भुज बिसाल गहि हृदय लगावा।।

अनुज सहित मिलि ढिंग बैठारी। बोले बचन भगत भय हारी।
कहु लंकेश सहित परिवारा। कुसल कुठाहर बास तुम्हारा।।

खल मंडली बसहुँ दिन राती। सखा धरम निबहइ केहि भाँति।
मैं जानहुँ तुम्हरी सब रीती। अति नय निपुन न भाव अनीती।।

बरु भल बास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ विधाता।
अब पद देखि कुसल रघुराया। जौं तुम्ह कीन्हि जानि जन दाया।।

दोहा – तब लगि कुसल न जीव कहुँ, सपने हुँ मन विश्राम।
जब लगि भजत न राम कहुँ, सोक धाम तजि काम।।

सरल साधना

अध्यात्म मार्ग में हमारा आपा (अहं) ही अवरोध है। किसी प्रकार यदि यह भ्रम टूट जाये तो काम बन जाता है। इसके लिये अपने सद्गुरु देव का तसव्वुर (याद) एक अचूक उपाय है। साधक अपने सद्गुरु देव का चिन्तन, उनकी उपस्थिति का एहसास करता है, मानो वे ही इस देह में बिराजे हों। उन्हीं का शरीर, उन्हीं का मन, उन्हीं की बुद्धि यह सब कुछ उन्हीं का है। अपना सर्वथा अभाव। अपन अलग से हैं ही नहीं, जो है वे ही हैं। उठना-बैठना, खाना-पीना, सारी गतिविधि उन्हीं के निमित्त, उन्हीं की प्रसन्नता के लिये, उन्हीं की याद में, उन्हीं के द्वारा होने लगे। पूरी आस्था से ऐसा भावपूर्वक होने लगे तो यही एक साधना आत्मबोध के लिये काफी है।

अपनी अलग से उपस्थिति का ही तो भ्रम टूटना है। इसके लिये समर्थ सद्गुरु की याद से बढ़कर अन्य सरल साधन नहीं है। सद्गुरु स्वयं पूर्णतः सत्य में समाहित होते हैं, अतः उनसे तदाकार होते ही स्वतः सारा काम बन जाता है।

सन्त-मार्ग का यह सरलतम साधन है। किन्तु इस साधना में ऐसे सद्गुरु का आन्तरिक सम्पर्क आवश्यक है, जो करुणा से परिपूर्ण हों, जिनका आचरण शुद्ध हो और जो स्वयं पूरी तरह अपने आराध्य में विसर्जित हों। यदि ईश्वर कृपा से ऐसे गुरुदेव से हृदय मिल जाये तो फिर पूरी तरह समर्पित हो जाएँ। शिशुवत सच्चे भाव से पुकारते चलें। उनका निश्छल प्रेम उनकी अहैतुकी कृपा मांगे। केवल उन्हीं को चाहें, उन्हीं को रिझावें। वे ही हमारे प्राणों में बस जाएँ, वही हमारे सर्वस्व बन जाएँ।

संकल्प में बड़ा असर होता है। हम जिसका चिन्तन करते हैं वैसे ही बन जाते हैं। समर्थ सद्गुरु का दृढ़ता से चिन्तन किया जाए तो तद्रूपता होने लगती है; सहज ही उनके गुण हममें उतरने लगते हैं और उनकी उपस्थिति का अनुभव होने लगता है।

अपना अहं मिटाकर सुगमता से प्रभु के दरबार में पहुंचने के लिये किन्हीं सच्चे सन्त के स्वरूप को धारण कर लें। चलते-फिरते, सोते -जागते, उठते-बैठते हर समय उन्हीं पर ध्यान जमा रहे। थोड़ी देर को भी यह मूर्ति ओझल न हो।

हृदय में भाव रहे कि इस शरीर में वे ही बिराजे हैं, वे साक्षात् परमेश्वर हैं। जिधर देखें वे ही दिखाई दें। ऐसा लगने लगेगा कि हम नहीं है सद्गुरु ही हैं। शरीर मन, बुद्धि सब में वे ही उपस्थित हैं।

हृदय में सद्गुरु को धारण करने से, हर समय उनका चिन्तन करने से अहं विलीन होने लगेगा। सभी शक्तियाँ तथा अवस्थाएँ गुरु के माध्यम से शिष्य में उतरने लगेंगी, जैसे चुम्बक की शक्ति लोहे में आ जाती है।

सूफी साधना-पद्धति में भी यही बताया है कि **"तसव्वुरे-शेख"** इतना हो कि **"फनाफिल शेख"** हो जाएँ अर्थात् गुरु में लय अवस्था हो जाए ; अपना अस्तित्व गुरु में खो जाए, यही ईश्वर के साथ एक होना या स्वरूप में स्थित होना है।